GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

Class No. H
891·4317
Book No. V338a

N. L. 38.

MGIPC—S1—19 LNL/62—27-3-63—100,000.

DEPARTMENT/OFFICE

File No.

Serial No.

Draft Letter / Memorandum / Telegram

1 Date of despatch

No. Dated

2 List of enclosures

H 891·4317 V 338a.

Vali Muhammad Nazir Akbārābādī

Asaār Miyāni Nazir ke, by Vali Muhammad Nazir Akbārābādi; ed by Lallu-lal Kavi. Calcutta, [Sanskrit Press]., 1810.

24 p. 21·5 cm.

Title page wanting

Early 18th century Akbarabad was the second name of Agra.

H891.4317
Y338a
Acc 6854 dt 28.11.57

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ आरमियांनज़ीरके ॥ जि
सेकहताहैतूग़ाफ़िलयहमेराहैयहमेराहै। यहजिस
काहैउसीकाहैनमेराहैनतेराहै ● तुअबवलसोचतोदि
लमेंकितूहैकौनऔरक्याहै। निमाज़ीहैशराबीहै
चकाहैलुटेराहै ● फ़रिश्ताहैपरीहैआदमीहैदेवहै
।ऽनहै। बलाहैभूतहैसिड़हैमक्करहैकमेराहै ● प
रोंसेअपनेउड़ताहैतुयापाओंसेचलताहै। कबूतरहै
भुतरहैफ़ीलहैख़रहैबछेराहै ● तेराक्यानामहैक्याज़ा
तहैक्याकामकरताहै। मुसव्विरहैमुलम्मचीहैकमंग
रहैचितेराहै ● कहांसेआगयाहैऔरकहांजावेगाआ
ख़िरको। मुसाफ़िरहैवतनहैयातेराइसजापैडेराहै ● ज
बइनचीज़ोंमेंतूअपनेतईंकुछचीज़ठहराले। ताइस
केबादफिरकहियोयहमेराहैयहमेराहै ● तुक्यावा
क़िफ़हैतुजकोकिसनेकिसचरख़ेमेंकाताहै। तुक्याजा
नेंकितुजकोकिसअटेरनमेंअटेराहै ● तमाशाहैम
ज़ाहैसैरहैक्याक्याअहाहाहा। मुसव्विरनेअजबकुछ
रंगकुदरतकाबखेराहै ● तरक़ीमेंतनज़्ज़ुलऔरत
नज़्ज़ुलमेंतरक़ीहै। अंधेरेमेंउजेलाऔरउजेलेमें

NATIONAL LIBRARY
No. 6854
Date 28.11.57

अंधेरा है ❁ तिलसमातेहक़ोक़ोहैयह कुछ समझानहीं
जाता। यहीचांदऔरयहीसूरजयहीसांझऔरसवे
राहै ❁ नज़ीरअल्लाहिअल्लाइसचमनमेंदमग़नी
मतहै। कहांफिरहमकहांफिरतुमयहएकदम
कावसेराहै ॥१॥ ❁ ॥ आंसुओंसेजूमरनकदाग़ोजि
गरधोतेरहे। मिसलेशबनमइसचमनमेंहमसदा
रोतेरहे ❁ क्यासियहबख़्तीहैयहजोशामसेलेसुबह
तक। यारनेजागाकियाऔरहमपड़ेसोतेरहे ❁ सब
क़बख़्तीनेनदिखलायाहमेंएकवक़्तसब्ज़। गरचेतुख़्
मेंइश्क़हमइसबाग़मेंबोतेरहे ❁ क्याग़ज़बहैवाहना
दानीकिवक़्तेमर्गतक। वहहमेंढूंढाकियाऔरहमछु
पेखोतेरहे ❁ हज़रतेआदमहुएइसदाममेंआकर
असीर। जबफ़सेदादानोंकिसग़िनतीमेंफिरपोतेरहे
❁ कोहकनजिनपत्थरोंकाकरगयाथाढेरआह। अब
तलकउनपत्थरोंकोसिरपेहमढोतेरहे ❁ जबसुआम
जनूंवियाबांमेंनोउसअल्लाशिक़केबाद। हमपैक्याक्याइ
श्क़केजोरोसितमहोंतेरहे ❁ वस्लमसेकलतूजोउठ
आयाख़फ़ाहोकरनज़ीर। क्याकहेंसबआशनानेरोलि

थेरोतेरहैं ॥ २ ॥ ❁ ॥ चांदअपनातोकिसीश्रौरकाहा
लानिकला । हमजिसेसमझेथेगुलहायवहलालानिक
ला ❁ भीखलेनेंतेरेइसगोरेसेमुखड़ेकीरात । बदर
चांदकालियेहाथमेंप्यालानिकला ❁ थाइरादातेरीक
रियादकरूंहाकिमसे । वहभीकंबख़्ततेराचाहनेवा
लानिकला ❁ उसकेचोरेपेनहीकाकुलेमुश्कीकिनमू
द । यहपिटारीकेतईंचोरकेकालानिकला ❁ नूरप
रजैसेकिसीवक़्मेंचमकेथीझलक । कुछसरेबामसेवै
साहिउजालानिकला ❁ रातकोठेपेचढावहतोकहूंक्या
मज़्राह । कौंधबिजलीसेभिकुउसकाउजालानिक
ला ❁ मिटगएश्रोरोफ़िग़ांजीकेनिकलनेहीनज़ीर ।
फिरनसीनेसेउठीआहननालानिकला ॥ ३ ॥ ❁ ॥ ब
हअबमैपीकेगुलज़ारोंमेंलोटा । चमनहुसरनसेअंगा
रोंमेंलोटा ❁ दिलउसकीदेखपाज़ेबोंकोग़श्हो । कु
मकचालोंकीझनकारोंमेंलोटा ❁ नकलकेंक्योंकिश्राखों
केकटोरे । गयादिलकाहिलश्राज़ारोंमेंलोटा ❁ पलंग
परचांदनीमेंकरवटोंसे । वहजोंजोंबढीश्रौरहारोंमें
लोटा ❁ वहश्रालमदेखउसकादिलमेंमहताव । स

हूरतकर भूकसेनारौं मेंलोटा ● लड़ाअबरूकी शमशेरौं
सेजबदिल । तोउसकेइ सतरहवारौं मेंलोटा ● कहीं
शबतसफ़े मेंदामें घिरकर । फिरेहैजैसेतलवारौं मेंलो
टा ● चमनकी सैरमें क्याक्यानज़ीरआज । नशेपीपीके
मैख़्वारौं मेंलोटा ॥ ४ ॥ ● ॥ ख़ाहजलायाख़ाकबनाइ
सदरपरप्यारे बैठेहैं । बेकसबेबसहोकरअबतोतेरेस
हारेबैठेहैं ● अपनेइश्क़की बाज़ीमें क्यापूछेहैअयमी
रविसाल । एकतुहीतोजीताहैऔरहमसबहारेबैठेहैं
● देखाख़तकेआनेहिउडगएयारजवानीहोकाफ़ूर ।
थेजोतुम्हारेदिलकेप्यारेचाहमेंहारेबैठेहैं ● आहकौ
नसीज़िदहैज़ालिमटुकतोख़ुदासेडरसाकी । औरतोघी
पीउठभिगएहमहाथपसारेबैठेहैं ● ग़ैरतोउसकेकू
चेमेंदिलशादफिरैंहैंऔरहमआह । हैबतखाएखि
रकोजुल्मएचुपमनमारेबैठेहैं ● हरसाअतमुज़्राक
नर्योंकोदेखकरअपनीमजलिसमें । हंसकरतंज़सेक
हताहैहांआपभीबारेबैठेहैं ● दिलतोख़फ़ाहोउसकी
जफ़ासेकहताहैअबउठचलिये । लेकिनहैकुछशर्मेव
फ़ाजिसबाअसकेमारेबैठेहैं ● अबतोनदीकुककीकेखि

वाक्यालेकेउठेंअयशोख़रसाल । हमतोअपनासवर
दिलोटींपहलेहिवारेबैठेहैं ● सहनिचमनमेंख़ूबांका
क्याज़ोरहैजलसाआजनज़ीर । देखनोचलकरक्या
क्याअजबकेराजदुलारेबैठेहैं ॥ ५ ॥ ● ॥ साक़ीवहा
रआईऔरजोशहैगुलौंका । लाजामभरकेसुनलेदु
कशोरबुलबुलौंका ● दिललेकैतोहमारामिलतानहीं
ख़ुशीसे । शिकवाकरूं मैंक्याक्याउसकेतग़ाफ़िलौंका
● एकदिनवहशोख़गुलरूमुहपासमेरेलाकर । बो
लाकिलेलेबोसाइनउम्रकेगुलौंका ● मुहदेखदेख
उसकामैंनेकहाकिप्यारे । समझाहूं मैंतुम्हारेअंदाज़
चोचलौंका ● रुख़सारकातोबोसाफ़िनहारमैंनलूंगा
। इनकाअदबनरखनाहैकामजाहिलौंका ● ऐसाहि
गरहैदेनातोदीजियेलबोंसे । बोसालबोंकालेनाहैका
मकामिलौंका ● तबतोनज़ीरहंसकरबोलाकिवहमस
लहै । यानेकैगुडतोखावेपरहेज़गुलगुलौंका ॥ ६ ॥
● ॥ जहांक़दउसकाहैजलवेफ़रमातोसर्वव्हांकिसहि
साबमेंहै । वहक़ामतऐसाहैकुछक़यामतक़यामतउस
कीरिकाबमेंहै ● यहसबग़लतहैजोयेंहैंकहतेकिउस

कामुखड़ानक़ाबमेंहै। नक़ाबक्याहैवहशर्मगीनीनक़ाब
सेभीहिजाबमेंहै ● वहगोरापिंडाऔरउसमेंसुरख़ी
मगरख़ुदानेबेसिरसेनापा। कियाहैमैदानेमोतियोंका
औरउसकोगुंधाअहाबमेंहै ● चमकजोमुखड़ेकिदे
खउसकेतोहमनेअपनेयहदिलमेंजाना। इसीकेप
रतोसेम:हैरोशनइसीकानूरआफ़ताबमेंहै ● अग
रहैमहबूबलामकामेंतोव्हांभीदेखेंगेउसकोजाकर।
ग़रज़वहजिसकाकिनामदिलहैयहधुनउसआबोज
नावमेंहै ● जोग़ुस्से होकरवहदेवेगालीतोइसअदासे
किहमतोक्याहैं। फ़रिश्ता:ग़शहोकेलोटजावेंयहजु
म्ल़उसकेअनाबमेंहै ● बंधाहैजबसेख़यालउसकाअज
बग़ैरउसीलगनलगीहै। कभीवहदिलमेंकभीजिगर
मेंकभीवहचश्मिपुरआबमेंहै ● नज़ीरसीखेसेइसमरस
भीवशरकिहोतीहैंचारआंखें। पढेसैजिसकेहोंलाम
आंखैंयहइसमदिलकोकिताबमेंहै ॥ ७ ॥ ● ॥ नज़
रपडाएकबुतपरीवशनिरालीसजधजनईअदाका।
जोउमदेखोतोदसबरसकीपक़हरआफ़तग़ज़बख़ुदा
का ● जोघरसेनिकलेतोयहक़यामतकिचलतेचलतेक़

दमक़दमपर । किसीकेचुटकीकिसीकैकुहनीकिसी
केठोकरनिपटलड़ाका ● यहरमयहवहशतयहदू
रखिचनायहनंगआशिक़केदेखनेका । जोपातखड़केह
वासेआकरतौसमझैखटकानिगहकेपाका ● गलेलिप
टनेमेंयहशितावीयहइज़्तरावीकिमिसलबिजली । इध
रजोचमकाचमकचमककरउधरजोलपकातौफिरझपा
का ● नवहसम्हालाकिसीकासम्हलेनवहमनाथामने
किसीसे । जोक़ाबिआशिक़परआकेमचलेतौग़ैरकाफिर
नआशनाका ● यहराहचलनेमेंअचपलाहटकिदिख
लाईहैनज़रकहींहै । कहांकाऊंचाकहांकानीचाख़
यालकिसकोक़दमकिजाका ● यहचंचलाहटयहचु
लबुलाहटख़बरनतनकीनसिरकीसुधबुध । जोचीरा
बिखराबलासेबिखरानबंदबांधाकभीक़बाका ● लड़ावे
आखैंयहवेहिजाबीकिफिरपलकसेपलकनमारे । जो
नज़रनीचीकरैतौगोयाखिलाशगूफाचमनहयाका ●
जोशक्लदेखोतौभोलिभोलीजोबातैंसुनियेतौमीठीमीठी
। पैदिलवहपत्थरकिसिरखुड़ादेजोनामलीजेकभीव
फ़ाका ● नज़ीरकुपजाकहींसरकजावदख़्लेहूरनहु

पालेमुहको। जोदेखपाताहैगरवहज़ालिमतौयारफिर
हैअभीरुडाका ॥ ८ ॥ ● ॥ जबमैंसुनाकिआपकादि
लमुझसेहटगया। सुनतेहीइसकेमेराकलेजाउलटग
या ● छीनायादिलतौचश्मनेलेकिनमैंक्याकरूं। अप
नेहीऊपरउसख़फ़ेमिज़गांमेंबटगया ● ऐसीतौभा
रीकौनसीहमसेहुईख़ता। जिससेयहजीउदासहु
आदिलउचटगया ● आंखेंतुम्हारीक्याफिरींहमसेकि
इनदिनों। सचपूछियेतौहमसेज़मानापलटगया ●
हमतौतुम्हारीचाहकेदिलसेगुलामहैं। यहकहकेघर
मेंउसकेगलेसेलिपटगया ● कितनाहीउसनेमुझको
छुड़ायाझिड़कझिड़क। परमैंतौघपचिबांधकेउससेचि
मटगया ● यहकश्मकशहुईतौगरेबांमेराइधर।
टुकड़ेहुआऔरउसकादुपट्टाभीफटगया ● आख़िरइ
सीवहांनेमिलायारसेनज़ीर। कपड़ेबलासेफटगएतौ
हातौपटगया ॥ ९ ॥ ● ॥ जुबैठीसोसनीजोड़ेसेवह
इकआनकोठेपर। तौक्याक्याउसकीफूलीहैनाफ़रमा
नकोठेपर ● मेरादिलबांमपरदेखउसकोयोंकुरबान
होताहै। कबूतरजैसेफिरताहोकहींगिरदानकोठेपर

● निगहकेतारसेलटकाखटोलादिलकोउसलफ़तका ।
कभीतोखेंचलोहमकोभीतुमअयजानकोठेपर ● तुम्हा
रीमिहरबांनीकेसबबसेआजतोप्यारे । हमाराभीनिकल
जावेहरअरमानकोठेपर ● यहसुनकरवहपरीवोली
मियांचलराहलेअपनी । इन्हींबातोंमेंकितनोंकीगई
हैजानकोठेपर ● कोईआबुलहवसयहांअपनेमतलब
कोनहींपहुंचा । हुईहैसैंकड़ोंसेजानऔरपहचानको
ठेपर ● नज़ीरइसतरहजोआतेरहेहैंयारकितनों
के । परीज़ादोंकेकुछचलनानहींआसानकोठेर ॥ १०
॥ ● ॥ अजबढबसेचमकताहैवहबालाउसकावालासा
। किहरयकझोकमेंहोताहैबिजलीकाउजालासा ● व
हबालाहींनहीकुछदिलकोभडकावेमेंडालेहै । जोहै
खाख़ूबनोबालीभीवनजानीहैवालासा ● वहबालाहाक़
दउसकाऔरवहबालाकानकाथारो । करेहैउसपरी
केवालेजोबनकोदुबालासा ● नजुमक़ोंहींकीफ़ोकेंतीर
सीलगतीहैंसीनेपर । करनफूलोंकीनोकेंभीलगाजाती
हैंभालासा ● क़यामतक़ामतोंमेंकुछउसकीबालाबुलंदी
में । नज़रआताहैउसकाहीमुझेकुछबोलबालासा ●

मुझेकलइत्तिफ़ाक़नदेखउसएयारनेपूछा । कितेरी
चश्मसेबहताहैक्योंआतिशकानालासा ◉ अगरचाहेव
हहमकोदाममेंलावेतोक्याकुदरत । कहांहमउसके
घेरऔरकहांमकड़ीकाजालासा ◉ किसीनेकहदिया
उससेनज़ीरइसकोहीकहतेहैं । परोंपरआजपरि
यांकेहैजिसकाइश्क़कालासा ◉ वहगोरासाबदनऔर
चांदसामुखड़ाभीहोताहै । तोव्हांयहअक्सभीरहता
हैउसकेपासछालासा ◉ बडेजोख़ूबरूहैंइससेवहड
रतेहैंतुमक्याहो । तुम्हेंतोजानताहैएकहलवेकातिन
लासा ◉ इसैहलवानसमझोतुमअजीसाहिबक्याबात
है । यहलिगनासायहदुबलासायहरूखासायहकाला
सा ॥ ११ ॥ ◉ ॥ सबतरहकाफ़ोहैकैदउसज़ुल्फ़
केतंज़ीरकी । मुजरिदानेकोनहीहाजतकुछअबकंजी
रकी ◉ हैजोउसचंचलकीतिरछीसीकमरखियोंकीनि
गाह । आनरखतीहैवहकाफ़िरबाकगअनीनीरकी ◉
मुद्दतोंसेक़सदथापरयारोहमनेएकदिन । यारकेघर
जाकेठहराईज़ियाफ़तखीरकी ◉ किशमिशोंपिस्ते
चिरोंजीक़ंदमिसरीऔरगुलाब । कीमगाकरख़ूबतैया

रीबिरंजोशीरकी ● उसज़ियाफ़तकीख़बरजिसद
अरक़ोवैंनेसुनी। फटगईछातीयहसुनतेहीहरए
रफ़ीरकी ● वोग़मसेग़मकेउन्हेंआयाछठीकादूधया
द। वैंहीसबनेक़ज़ाकेआपसमेंयहीतदबीरकी ● या
नेंऐसाहोकिइसकीखीरकोदलियाकरैं। कहकैयहऔ
रज़ाकेउसदिलबरसेकुछनक़रीरकी ● वहतोआताथा
बलेउनकाफ़िरोंनेथकावयक। जावैमरजीफेरदौड
सऊबकीतसबीरकी ● उसकोव्हांरोकाउधरऔरआ
पआएमेरेपास। सबनेकुछअपनीशरारतमेंनथीतक़सी
रकी ● यैंलगेकहनेमुझेवहतोनहींआनेकाआज।
आमदटीजबतोसुनमुझआशिक़केदिलगीरकी ● उस
घड़ीऐसामेरीएकआहकाधुआंलाऊठा। वारेमेरीआह
नेकुछइसक़दरतासीरकी ● जोयकायकयारमेरेपास
आयाऊंचानज़ीर। वेनौदलियाकरचुकेथेफिरख़ुदाने
खीरकी ॥ १२ ॥ ● ॥ कियरहेआजइलाहीवहशोख़
छलबलिया। किजिसकेग़मसेमेरादिलहुआहैबावलि
या ● नमामगोशैंकेहसरतसेरंगउड़जाने। जोआजघ
रसेनिकलनामेराबहसांवलिया ● तुझेख़बरनहींउस

चुनकिबाग़सेगुलचीं । बड़ीसीफूलोंकीएकभरकेलेग
याउलिया ● ख़ुदाकेवास्तेहमग़ोनइसकोकोठीवाल ।
फ़रेबदेताहैतुमकोयहबुलहवसठलिया ● नज़ीर
एकीहमनेजोकलख़्वियाफ़तनकी । पकायाक़र्ज़मंगाकर
पुलावऔरक़लिया ● सोयारआपनआयारक़ीबकोभेजा
। हक़ारहैफ़हमऐसेनसीबकेबलिया ● इधरतोक़र्ज़
हुआऔरउधरनआयायार । पकाईखीरथीकिसम
तसेहोगयादलिया ॥ १३ ॥ ● ॥ जिनदिनोंयहजल
वेफ़रमावहसितमईआदथा । हरमकांहरशोरहर
जामहूइरेफ़रिआदथा ● ख़ल्क़मेंआबादथायहांतकह
मारेदिलकाशहर । हरमोहल्लाजिसकारश्क़ेशाजहां
नाबादथा ● ख़ूबरूयोंकेचलेआतेथेपैग़ामोसलाम । कु
छकिसीकाक़ुछकहथाऔरकुछकहींइरशादथा ● एकही
चक्करदियाऐसाफ़लकनेआनकर । जोवहआलमए
कपलकहिलनेमेंसबबरबादथा ● दोमुख़ल्विरखेचनेआ
एथेतसवीरउसकीकल । लोगकहतेहैंकिएकमानीथा
एकबिहज़ादथा ● देखतेहीउसकीसूरतसिरझुकाक
रहगए । गरचेअपनेकाममेंएकएकवहउस्तादथा

❀ जबकोईबोलाकिखैंचोयोंपुकारेभरकेआह । वह
भीभूलेमहरवांआगेजोहमकोयादथा ❀ ख़ूबरूथा
कैंजोआजिससेनथीकुछहमसेशह । जोशिकारअफ़ग
न्यापहलेअपनावहसैय्यादथा ❀ करगयापामालको
होदश्तएकदम्मोंनज़ीर । अबख़ुदाजानेकिवहमज
नूंथायाफ़रहादथा ॥ १४ ॥ ❀ ॥ उसकोतनहाजोक
हींपाइयेऔरसोरहिये । फिरतोक्याऐशकीठहराइ
येऔरसोरहिये ❀ गरवहनाज़ुकबदनआवेतोपलं
गपरयारो । पत्तियांफूलोंकीबिछवाइयेऔरसोरहिये
❀ ऐशऔरइशरतकासबअस्बाबमुहैय्याहैमियां । अबय
हीदेरहैबसआइयेऔरसोरहिये ❀ गरमिलैंनाकवी
छांहैंतोनशेपीपीकर । लोटियेऐंडियेअंगड़ाइयेऔर
सोरहिये ❀ वस्लोअयज्जानभलायहभीकोईज़िदहै
आह । एकतोरातढलेआइयेऔरसोरहिये ❀ क्याम
ज़ाहोजोकभीयारकेतलुएसहला । ऊंघनेऊंघनेझु
कजाइयेऔरसोरहिये ❀ वहभीएकसैरहैजोयार
कोचोरीसेबुला । ख़ौफ़सेकांपियेथर्राइयेऔरसोरहि
ये ❀ झूठीअंगड़ाइयांजोलेनेहोआंखेंमलमल । बस

ऐमजनूंमजनूंआजाइयेऔरशोरहिये ● साक़ीकहता
हैमुझेअबतोनमैंहूंनगज़क । हांमैंहाज़िरहूंमुझेखा
इयेऔरशोरहिये ● यारगैरोंसेमिलामगरमुझआर ख़हो
दिल। ज़हरमगवाइयेऔरखाइयेऔरशोराहिये
● नींदआंखोंकीनहींयारतोरूठाहैनज़ीर । बकबकै
अबउसकोमनाआइयेऔरशोरहिये ॥ १५ ॥ ● ॥ ग
मेफ़ुर्क़तमेंजोचाहूंकिहंसोंनेदे । आहयहदर्द क़ुवह
काफ़िरहैयहक्यासोंनेदे ● सुनकेअफ़सानएजांसों
क़मेराज़ालिमने । योंकहादूरहोचलबिस्तरनफ़िराक़ों
नेंदे ● चांदनीरातहैऔरसहनचमनहैप्यारे । इस
मज़ेमेंतूनहोमुझसेजुदासोंनेदे ● शामसेयारजोसोया
थाख़ुमारआलूदः । सुबहकोमैंनेजगायातोकहासोंनेदे
● जबमैंनउन्नोंकोहरमलकेयहकीअर्ज़किजान ।
दोपहरदिनतोचढ़ातावेकुजासोंनेदे ● सुनकेयहहो
केग़ज़बनींदमेंझुंझलाकेकहा । मारबैठूंगानकरमुझको
ख़फ़ासोनेदे ● आंखलगतीहीनहींइश्क़मेंक्याकीजेन
ज़ीर। हमतोबकतेरहेसोवेंजोख़ुदासोंनेदे ॥१६॥●॥
रहैंहैंअबतोपाखड़उसकेआरिज़केशामेसहरमोती । अबींप

रमोतीऔरबेसरमेंमोतीमागपरमोती । इधरजुग
नूमेंऔरकुछबालियोंमेंजलवेगरमोती । भरेहैंउसप
रीमेंअवतौयारोंसरबसरमोती । गलेमेंकानमेंनथमें
जिधरदेखोउधरमोती ❁ कोईउसचांदसेमाथेकेटी
केमेंउछलताहै । कोईबुंदोंसेमिलकरकांनकेनरमेंमें
पलताहै । लिपटकरधुकधुकीसेकोईसीनेपरमचलता
है । कोईझुमकोंमेंझूलेहैकोईबालोंमेंछिलताहै । यह
कुछलड़ीनहैजबअपनाछिदातेहैंजिगरमोती ❁ कभी
कहुनाकनीहंसकरओटुकबातेंबनातीहै । तोएकएक
बातमेंमोतीकोपानीकरबहातीहै । अदामेंनाक़मेंचंचल
अजबआलमदिखातीहै । वहसुमरनमोतियोंकीउंग
लियोंमेंजबफिरातीहै । तोसदकेउसकेहोतेहैंपड़ेहर
पोरपरमोती ❁ कभीओबाखवालअपनेमेंवहमोतीपि
रोतीहै । नज़ाकतसेअरक़कीबूंदभीमुखड़ेकोधोतीहै ।
बदनभीमोतीऔरसिरपांवसेपहनेभीमोतीहै । सरापा
मोतियोंकाफिरतोएकगुच्छावहहोतीहै । किकुछवह
खुशकमोतीकुछपसीनेंकेतरमोती ❁ वेकाफ़िरअख
ड़ियांदिलजिसकेहरदमजुल्मसहताहै । सफ़ाईऔ

झलककाउनमेंएकदरयाबहताहै। जोकोईउस
कोदेखेहैतोबसफिरदेखरहताहै। अगरकहताहैकु
छदिलमेंतोहैरांहोयहकहताहै। यहआखेंहैंइलाही
याभरेहैंकूटकरमोती ● ग़लतहैउसलबेरंगीकोबर
गेगुलसेक्यानिसबत। किजिसकीहैयक़ीक़ोयमनिश्रो
याक़ूतमेंश्रुहरत। उदाहटकुछमिसीकीकुछवहउस
परपानकीरंगत। वहहंसतीहैतोझमकेहैजवाहरख़ा
नएक़ुदरत। इधरलश्रलश्रौरउधरनीलमइधरमर
श्राइधरमोती ● गलेमेंउसकेजिसदममोतियोंकेहार
होतेहैं। चमनकेगुलसबउसकेवस्फ़मेंमोतीपिरोतेहैं
। ननलहारश्कसेशबनमकेक़तरेदिलमेंरोतेहैं। फ़लक
परदेखकरतारेभीश्रपनाहोशखोतेहैं। पहनकरबि
सघड़ीवैठेहैवहरश्कके़कमरमोती ● शफ़क़मेंइनिफ़ा
कन्जैसेहूरजड़ूबकरनिकले। वहस्य श्रबरेगुलाबीमेंक
हींबिजलीचमकजावे। क्योंहोकिसतरहयारोंश्रबइस
श्रालमकेक्याकहिये। तबस्सुमकीझलकमेंयोंचमकजा
तेहैंदांतउसके। किसीकेयकबयकजिसतरहजातेहैं
बिखरमोती ● वहगहनामोतियोंकाश्राहश्रौरकुन्दन

वहमोतीसा। औरउसपरमोतियौंकेहारबाज़ूबंदऔर
गजरा। सरासरक़ेबक़ीनतमेंवह आलमदेखकरउस
का। जोकहताहूं अरीज़ालिमतुकअपनानामतोबतला।
तोहंसकरमुजसेयौंकहतीहैवरहर इकेकमरमोती ❁ क
ड़ेते ड़छड़ेपाक़ेबजबआपसमेंलड़तेहैं। तोहरमनका
रमेंकिसकिसबहारोंसेरुगड़तेहैं। हरेकदिलसेबिगड़ते
हैंहरेककेजीमेंअड़तेहैं। कड़ेसोनेकेपयामोतीभीउस
केपांवपड़तेहैं। अगरबाविरनहोदेखोहैंउसकोकफ़ए
परमोती ❁ खफ़ाहोइनदिनौंकुछरूठबैठीहैजोहमपर
वे। तोउसकेग़म्मेंजोहमपरगुज़रतीहैसोमनपूछो। च
लेआतेहैंआंसूदिलपड़ाहैहिजरमेंग़शहो। वहदर
यामोतियौंकाहमसेरूठाहोतोफिरयाशे। भलाक्योंकारन
वरभांवेंहमारीचश्मतरमोती ❁ हमेंक्यौंकरपरीक़ादोंसे
बोसोंकेनहीं लहने। जड़ाऊमोतियोंकेइसग़ल्लपरवा
रियेगहनें। सख़ुनकीकुछजोउसकेदिलमेंहैउलफ़
तगीरहने। नज़ीरइसरेख़तेकोसुनवहहंसकरयों
लगीकहने। अगरहोतेतोमैंदेतीतुझेएकथालभरमोती
॥ १७ ॥ ❁ ॥ अपनेग़मख़्वारोंसेकोईआनहंसलेबोललै

। दर्दमंदोंकानिकालअरमानहंसलेबोलले । फिरकां
हांयहदिलबरीयहआनहंसलेबोलले । दमग़नीमत
हैअरेनादानहंसलेबोलले ॥❀मानलेकहनामेराअयजा
नहंसलेबोलले । हुस्नयहदोदिनकाहैमह्मानहंस
लेबोलले❀॥ अबतोतुझकोहक़नेदीहैहुस्नख़ूबांकी हा
र । चाहिनेंवालोंसेकरलेकुछसलूकऔरमहरप्यार ।
कौंधकाबिजलीकीऔरजोबनकामतकरइअ़्तबार । का
ठकीहांडीनहींचढ़तीहैप्यारेबारबार ॥ ❀ मानले ❀ ॥
हैजोअबचिहरेपैतेरेहुस्नख़ूबीकीझमक । ख़्वाहनहंस
बोलहमसेख़्वाहग़ुस्सेहोझिड़क । आहजबजातीरहेगी
यहचमकऔरयहझमक । फिरजोतूबोलेगाहरएकक्यों
कहेगाचलनबक ॥❀मानले❀॥ यातुझेख़ूबीहमाराहाथि
दिलकहनींनहो । याहमारीचाहतेरेनाज़कोसहनीं न
हो । आहखेतीहुस्नकाफिरकीहरीरहतीनहो । नावका
ग़ज़कीहैप्यारेयहसदाबहतीनहो ॥ ❀ मानले ❀ ॥
कौनसाहैहुस्नवालाआजतूमुझकोबता । जिसकोख़ू
बीकाहमेशःएकसाआलमरहा । क्योंख़फ़ाहोताहैइस
कोयादरखअयदिलरुबा । हाथफिरआतानहींकाफ़ि

रयहजोबनजबगया ॥ ● मानले ● ॥ कैसेकैसेख़ू
बरूटहांहोगएहैंमेरीजां । अपनेग़मख़ाशेकेअन्दाकर
गएहैंख़ूबियां । तूजोहमसेरूठारूठारहताहैनामिहर
बां । देखपछतावेगाग़ाफ़िलकुछतूपरमनकागुमां ॥ ●
मानले ● ॥ अबतोयहआशिक़काऔरऔरप्यारेतेरापां
वहै । मिन्नतेंहोतीहैंऔरतेरेनहींकुछभीवहै । यहजो
मअम्मूक़ीकाख़िज़ाआजतेरेनीवहै । भूलमतइसपर
मियांयहढलतीफिरतीछांवहै ॥ ● मानले ● ॥ दिल
ग़रीबोंकेजोप्यारेतुमसेअबदुखपायोंगे । एकदिनतु
मकोभीखूबांथीहिंदुखदिखलायगे । बातकोकहनेंको
हदेरिड़कियांतरसायगे । पांडेजोपछतांयगेआख़िरत
नैकोखायगे ॥ ● मानले ● ॥ अपनेअपनेवक़्तमेंक्याक्या
हीगुलरूबनगए । चांदसेटुकड़ेरहेप्यारेनगुलखेतनर
हे । मीनासीका ।नरहेऔरनाकहींजोबनरहे । ना
सदाफूलेनुरईऔरनासदासांवनरहे ॥ ● मानले ● ॥
कुसनकाआलमसिनअगरहरघड़ीमिचतानहीं । गुल
भीखिलकरएकबारअयजांनफिरखिलतानहीं । मुझ
सेनेसरूठनादमदमकाअबक़िलतानही । दूधऔरदि

अजबफटाप्यारेनेफिरमिलनानहीं ॥ ● मानले ● ॥ अबनज़ीरआगेतेरेरहनाहैहाज़िरसुबहशाम । प्यारसेहंसबोलप्यारेपीमसख़्तलफ़तकेजाम । फिरकहां यहउम्रऔरयहहुस्नक़सबातैंतमाम । कुछनरहवेगारहेगाआख़िरसुआल्लाकानाम ॥ ● मानलेकहनेमेंराअयजानहंसबोलले । उम्रयहदोदिनकाहैमहमानहंसबोलले ॥ १८ ॥ ● ॥ दुनियांअजबबाज़ारहैकुछजिन्सयहांकीसाथले । नेकीकाटरजानेकहैबदसेबदीकीबातले । आरामदेआरामलेआफ़ातदेआफ़ातले । मेवादियेमेवामिलेफलफूलदेफलपातले । कलजुगनहींकरजुगयहहैयहांदिनकोदेऔररातले । क्याखूबसौदानक़दहैइसहाथदेइसहाथले ● कांटाकिसीकेमतलगाओमिस्लगुलफूलाहैतू । वहतेरेहक़मेंतारहैकिसबातपरभूलाहैतू । मतआगमेंडेऔरकोफिरघासकापूलाहैतू । सुनरखयहनुकतावेख़बरकिसबातपरभूलाहैतू ॥ ● कलजुग ● ॥ चाहेसोलेलेइसघड़ीसबजिन्सयहांतैयारहै । आराममेंआरामहैआज़ारमेंआज़ारहै । दुनियांनजानइसकोमियांदरियाकीयहमझधार

है। औरोंकाबेड़ापारकरने गीबेड़े रहै ॥ ❁ कल
जुग ❁ ॥ शोखीशरारतमकरोफंदसबकेतमे ताहैय
हां। जोजोदिखाया औरकोसो आपभीदेखाहैयहां। मे
कीवदीजोकुछकरेसबकाप खाहैयहां। जैजौपड़ातु
मत हैटहांनिलतिलकालेखाहैयहां ॥ ❁ कलजुग ❁ ॥
जोऔरकीवखोरखेउसकाभीबखताहैपुरा। जोऔर
कीनोड़ेधुरीउसकाभीटूटेहैधुरा। जोऔरकेमारेछुरी
उसकेभीलगताहैछुरा। जोऔरकीचोतेवदीउसका
भीहोनाहैबुरा ॥ ❁ क ग ❁ ॥ जोऔरकोफलदेवे
गावहभीमेवाफलपावेगा। गेंहूंसेगेंहूंजौसेजौचांवल
सेचांवलपावेगा। जोआजदेवेगायहांवैसाहीवहकल्पा
वेगा। कलदेवेगाकल्पावेगाकल्पायगाकल्पावेगा ॥ ❁
कलजुग ❁ ॥ तूऔरकोनारीफ़करतुझकोसनाखानी
मिले। रतुझ आसांऔरकोतुझकोभीआसांनी
मिले। तूऔरकोमहमानरखतुझकोभीमहमानीमिले।
कोखिलारोटीमिलेपानीपिलापानीमिले ॥ ❁ कलजु
ग ❁ ॥ कररवेजोकुछकरनाहै अबयहदमनेकोईआ
नहै। यहजांनमेंयहजांनहैतुझजांनमेंतुझजांनहै। तु

हमलमेंटहांतुर [illegible] नमि [illegible] फ़ानमेंतूफ़ानहै । अहसान
कोअ [illegible] नहैरहमानकोरहमानहै ॥ ● कलजुग ●
॥ टहांजहरदेतोजहरवेअकरमेंअकारदेखले । ने
कीकोनेकीकामज़ामूक्तोकोटकारदेखले । मोतीदिवे
मोतीमिलेपत्थरदेपत्थरदेखले । गरतुजकोयहबा [illegible]
रनहीतोतूभीकरकारदेखले ॥ ● कलजुग ● ॥ जो
हारमेंदेऔरकोसोवहभीहाराजायगा । खोवैसहारा
औरकाऊसकासहाराजायगा । टहांआजजिसकेहाथ
सेकोइमरविचाराजायगा । [illegible] फिलनहोइसवाले
सवहभीमाराजायगा ॥ ● कलजुग ● ॥ ग़फ़लतकी
यहजागेनहींटहांसाहिबेइदराकरहूं । दिलशादरख
दिलशादरहूंगमनाकरखग़मनाकरहूं । हरहालमेंतू
भीनज़ीरअबहरक़दमकोखाकरहूं । यहवहमकां [illegible]
यमियांटहांपाकरहूंवेबाकरहूं ॥ [illegible] ● ॥ दुकानिसी
हवाकोछोडमियांमतदेसबिदेसफिरेमारा । क़ज़्ज़ाक
अजलकालूटेहैदिनरातबजाकरनक़ारा । क्याभैसावधिया
बैलशुतरक्यागौनेपल्लासिरभारा । क्यागेहूंचांवलमोठम
टरक्याआगधुआंक्याअंगारा । सबठाठपडारहजावेगाज

बलादचलेगाबनजारा ॥ ❁ ग[?]ैतूल[?]बनजाराऔरखे

पभीतेरीभारीहै। अयग़ाफ़िलतुझसेभी[?]

रबड़ाब्यौपारीहै। क्याशक्करमिसरीक़ंदगिरीक्यासांभ

रमीठाखारीहै। क्यादाखमुनक्कासोंठमिरचक्याकेसर

लौंगसुपारीहै ॥ ❁ सब ❁ ॥ तू[?]धियालादेबैलभ

रेजोपूरबपच्छमजावेगा। यासूदबढ़ाकरलावेगाया

घाटाबाढ़ापावेगा। बटमारअजलकारस्तेमेंजबभाला

मारगिरावेगा। धनदौलतनातीपोताक्याएककुनबापा

स[?]जावेगा ॥ ❁ सब ❁ ॥ हरमंज़िलमेंअबसाथतेरे

यहजितनाडेराडांडाहै। ज़रदामदिरमकाभांडाहै

बंदूक़सिपरऔरखांडाहै। जबनाइकतनकानिकल

गयाजोमुल्कोंमुल्कोंहांडाहै। फिरहांडाहैनेभांडाहैने

हलुवाहैनेमांडाहै ॥ ❁ सब ❁ ॥ जबचलतेचलतेर

स्तेमेंयहगौनतेरीढलजावेगी। एकबधियातेरीमट्टी

परफिरचरनेघासनआवेगी। यहखेपजोतूनेलादी

हैसबहिस्सोंमेंबटजावेगी। धीपूतजंवाईबेटाक्याबन

जारनपासनआवेगी ॥ ❁ सब ❁ ॥ क्योंनाहक़बोझ

उठाताहैइनगौनोंभारीभारीके। जबकाललुटेराआ

मपड़ाफिरद्[illegible]थापा[illegible]है। क्यासाक़जड़ाऊकर
[illegible]क्या[illegible]थानकिनारीके। क्याघोड़ेजीनसुनहरे
ऐंकेक्याहाथीलालअमारीके ॥ ● सब ● ॥ जोखेपभ
रैतूज्ञाताहैयहखेपमियांमतजानअपनी। अबकोइ
घड़ीपलसाअतमेंयहखेपबदनकीहैखपनी। क्याथाल
कटोराचांदीकाक्यापीतलकाढकनाढकनी। क्याबरत
नसोंनेरूपैकेक्यामट्टीकीहंडियाचपनी ॥ ● सब ● ॥
मग़रूरनहोतलवारोंपरमतभूलभरोसेढालोंके। सब
पत्तातोड़केभागेंगेमुहदेखअज़ [illegible] भालोंके। क्याडिब्बे
हीरेमोतीकेक्याढेरखज़ानेमालोंके। क्याबकचेताशमु
शज्जरकेक्यातख़तेशालदुशालोंके ॥ ● सब ● ॥ कु
छकामनआवेगातेरेयहलालज़मुर्रदसीमोज़र। स
बपूंजीबाटमेंबिखरेगीजबआनबनेंगीजीऊपर। क्याम
सनदतकियेमुल्कमकांक्याचौकीकुरसीतख़्तछत्तर।
क्यामालखज़ानामुल्कमकांदौलतहशमतफ़ौजेंलश
कर ॥ ● सब ● ॥ यहधूमधड़कासाथलियेक्योंफिर
ताहैजंगलजंगल। एकभुनगापासनआवेगामौकूफ़
हुआजबअन्नऔरजल। घरबारअटारीचौबारेक्याख़ा

शातनसुखक्यामलमल। क्याचिलइनतकियेरेशमके
क्यालालपलंगक्यारंगमहल॥ सब ● ॥ कौपुरषनम
कांबनवाताहैहैरखंभतेरेतनकापोला। तूजंचीगढ़ोच
छानाहैदहांगोरगढ़ेनेमुहखोला। क्यारेनीखंदकरंद
गड़क्याकोटकंगूराञ्चनमोला। क्याबुर्जेरंहकलातोप
क़िलाक्याशीशादारूऔरगोला॥ सब ● ॥ जबकाल
फिराकरचाबककोयहवैलबदनकाहांकेगा। कोईना
जसमेटेगातेराकोईगोनसियेंऔरटांकेगा। होढेरञ
केलाजंगलमेंतूखाकलहदकीफांकेगा। उसजंगलमेंजा
बञ्चाहनजीरएकभुंनगाञ्चाननझांकेगा॥ सबठाठपड़ा
रहजावेगाजबलादचलेगाबनजारा॥ २० ॥ ● ॥ यह
पेंठञ्जबहैदुनियांकीऔरक्याक्याजिन्सइखट्टीहै। यहां
मालकिसीकामीठाहैऔरचीज़किसीकीखट्टीहै। कुछ
पकताहैकुछभुनताहैपकवांनमिठाईपट्टीहै। जबदे
खाखूबतोआख़िरकोनेचूल्हाभाड़नभट्टीहै। गुलशोरब
बूलाआगहवाऔरकीचड़पानीमट्टीहै। हमदेखचुकेइ
सदुनियांकोसबधोखेकीसीटट्टीहै ● कोइताजखरीदे
हैंघहंसकरकोईतरखनखड़ाबनवाताहै। कोईकपड़े

रंगेपंहनेहैकोईगुदड़ीओढ़ेजाताहै। कोईभाईबाप
चचानानाकोइनातीपूतकहाताहै। जबदेखाखूबतोआ
ख़िरकोनेरिश्ताहैनेनाताहै॥ गुज़ोर ● ॥ कोईसे
ठमहाजनलाखपतीवक़्तकाकोईपनसारीहै। यहां
बोझकिसीकाहलकाहैऔरखेपकिसीकीभारीहै। यहां
आनेकोनख़रीदेहैऔरकिसनेजिन्सउतारीहै। अब
देखाख़ूबतोआख़िरकोदल्लालकोइब्योपारीहै॥ गु
ज़ोर ● ॥ कोइफूलकेबैठेमसनदपरकोइरोवेअपनी
दौलतखो। कोइबोलेअपनाभुजबेलाऔरमेराहोसोमु
झकोदो। कोइलड़ताहैकोइमरताहैकोइगऊड़ेहक
औरनाहक़को। जबदेखाख़ूबतोआख़िरकोकुछलेनाएक
नदेनाहै॥ गुज़ोर ● ॥ रम्मालनजूमीआमिलहै
औरफ़ाज़िलमुल्लांस्यानाहै। कोइआमिलकामिलदा
नाहैकोइमस्तक़लंदरदीवानाहै। नादीअलफ़तीलाफ़ाल
फ़िक़्रऔरजादूमंतरलानाहै। जबदेखाखूबतोआख़ि
रकोसबहीलामकरबहानाहै॥ गुज़ोर ● ॥ कोइ
कोठेकूचेगलियोंमेंतैयारकिसीकाघेराहै। कोइबाग़कु
आबनवाताहैऔरघेरकिसीनेघेराहै। निशफ़ाकिलेगग

ढेर लगे है यह मेरा है यह तेरा है । जबदेखा ख़ूब तो आख़ि
र को ने मेरा है ने तेरा है ॥ गुलशोर ❁ ॥ कोइ टोपी टोप
बनाता है कोइ बांध फिरा अम्मामा है । कोइ साफ़ा बर ह
आ फिरता है ने पगड़ी ने पाजामा है । कमख़ाब गज़ी और
शाल्के कानितकज़ि या है हंगामा है । जबदेखा ख़ूब तो आ
ख़िर को ने पगड़ी है ने जामा है ॥ गुलशोर ❁ ॥ कोइ बा
लबढाए फिरता है कोइ सिर को घोट मुडाता है । कोइ
कपड़े रंगे पहने है कोइ नंगम नंगा आता है । कोइ पूड़ा क
चा खाने है कोइ चापा तिलक लगाता है । जबदेखा ख़ूब
तो आख़िर को सब छोड़ अकेला जाता है ॥ गुलशोर ❁ ॥
कोइ रोता है कोइ हंसता है कोइ नाचे है कोइ गाता है । को
इ छीने झपटे ले भागे कोइ धौंस का डर दिखलाता है । कोइ
कायइ खल्ला करता है कोइ कुंजी को कुफ़्ल लगाता है । जब
देखा ख़ूब तो आख़िर को सब झगड़ा रह जाता है ॥ गुलशो
र ❁ ॥ कोइ बेचे भंग अमल कर अफ़यून मसकहीं दूध दही को
थोरी है । कोइ पड़ा सिर पर नालत है कोइ लादे बैल मुके
री है । कोइ झगड़े अपनी जागह पर यह मेरी है यह ते
री है । जबदेखा ख़ूब तो आख़िर को ने तेरी है ने मेरी है

॥ ग़ुलशोर ● ॥ कहींवछौटेकीथूनीहैकहींख़ासीकड़
छकीपूलीहै। कहींचलनीछाजपिटारीहैकहींचूल्हा
चकीचूल्हीहै। तरकारीबैंगनसागहरागुड़गांडागाज
रमूलीहै। जबदेखाख़ूबतोआख़िरकोसबबिकरीदेखत
भूलीहै ॥ ग़ुलशोर ● ॥ कहींबानरडेरनटाटगलीक
हींदमरखचमरखतकलाहै। कहींरोकरुपयेकाख़ुरदा
हैकहींकौड़ीपैसाधेलाहै। कहींछटनाछाजपिटारीहै
कहींविकताखाटखटोलाहै। जबदेखाख़ूबतोआख़िर
कोनेपीढ़ीखाटनचरख़ाहै ॥ ग़ुलशोर ● ॥ कोइभि
कराबाकडडातानाहैकोइहाथमेंरकेतुतलीहै। शहबा
ज़कोइलेबैठाहैऔरदौड़ाकिसीनेदुतलीहै। हैनारकि
सीकेहाथोंमेंऔरनाचतीफिरतीपुतलीहै। जबदेखाख़ू
बतोआक़िरकोनेरेशमसूतनसुतलीहै ॥ ग़ुलशोर ●
॥ अबकिसकारंगबुराकहियेऔरकिसकारूपभलाकहि
ये। एकदमकीपैंठलगीहैयहअब्बोईमज़ाचरभाकहि
ये। येसैरनमाशेदेखनओरअवज्ञाकहियेवेज्ञाकहि
ये। कुछबातनहीबनआंनेकीचुपचापभलाहैक्याकहिये
॥ ग़ुलशोरबबूलाआगहवाऔरकीचड़पानीमट्टीहै। हे

मदेखचुकेइ सदुनियांकोसबधोखेकीसीटट्टीहै ॥ २१ ॥
● ॥ बटमार अजलका आपकुंचादुगाइसकोटेखडरो
बाबा । अबअपकबहाओआखोंसेऔर आहैसर्दभरोबाबा
। दिलउथच्छठाकर जीनेसेबेबसमनमार मरोबाबा ।
काटनपकोखातिरींनेथेअबअपनीखातिरींबाबा । तनखू
स्वाकुबड़ीपीठकुईघोड़ेपरजीनधरोबाबा । अबमौतन
काराआवाजाचलनेकाफिकरकरोबाबा ● अबजीनेकोतु
मरखसनटोऔरमरनेंकोमहमानकरो । खैरातकरोइ
हसानकरोयापुन्नकरोयादानकरो । यापूरीलड्डूबटमा
ओयाखासाहलुवानानकरो । कुछलुत्फनहीअबजीनेका
अबचलनेकासामानकरो ॥ तनखूखा ● ॥ दिलका
टोअपनाजीनेसेअबऔरगलेकोमतकाटो । अबचाटफ
नाकीटुकचकखोऔरखूनकिसीकामतचाटो । धुनक्षे
डोहिसोबरखरेकौऔरभाजीअपनीतुमबांटो । नाकंट
बकेरोकूटचुकेअबऔरदुलनीमतकांटो ॥ तनखूखा
● ॥ यहअस्बकुतकूटाउछलाअबकोड़ामारोकेर क
रो । जबमालइकट्ठाकरतेथेअबतनकाअपनेढेरकरो । म
हंटूटाबगकरभागचुकाअबध्यानमेंतुमअमर्षोरकरो

। तुम साफ़ लड़ाई हार चुके अब भागने में मत देर करो ॥
ननसूखा ● ॥ खिरकी पा चांदी बाल ऊए मुह पीला पक
ड़े आन कुकीं । क़द टेढ़ा कान ऊए बहरे और आंखें भी धुं
धलाय गई । सुख नींद गई और भूख घटी दिल सुस्त
हुआ आवाज़ मद्धी । जो होनी थी सो हो गुज़री अब मरने
में कुछ देर नहीं ॥ ननसूखा ● ॥ इस पांव घिसट कर चल
ने से मत रस्ते के हैरां न करो । और पोपले मुह से रोटी को मत
मलमल कर हलकां न करो । अब आप ऊए तुम पानी से मत
पानी का नुक़सान न करो । कुछ लाभ नहीं इस जीने में अब
मरने से पहचां न करो ॥ ननसूखा ● ॥ गर अच्छी करनी
ने क़अमल तुम दुनिआं से ले जाओगे । तो घर भी अच्छा पा
ओगे और सुख से बैठे खाओगे । और एसी दौलत छोड़
के तुम को ख़ाली हाथों जाओगे । कुछ काम न होगा अब आने
को धक्का खाओगे पछताओगे ॥ ननसूखा ● ॥ यह कुछ
जिसे तुम अचंभे से हो यह खबर हम मतन के चुनती है । जि
स चकड़ी के न बैठे हो दिन रात यह चाकड़ी घुनती है । तु
म गठड़ी बांधो कपड़ों की और देख अजल सिर धुनती है
। अब मौन कफ़न की रूप झेका यहां तां ताना बाना बुनती है ॥

तनखूखा ● ॥ घरबार हवस और पैसेमें मत दिलको तु
मगर संद करो । या गोर बनाओ जंगलोंमें या जमनापर
ध्यान द करो । मैत ध्यान लगाओगी आख़िर कुछ मकर क
शेयाफ़द करो । बसब कुनतमाशा देखनु के अब आंखें य
भीबंद करो ॥ तनखूखा ● ॥ व्यौपार तोटहीका न कत
किया अबस्हांकाभी कुछ सौदा लो । जो खेप कु घर को चढ
नीहो कुसखेपको टहांसे लदवालो । कुसरा हमें जो कु
छ खानेहीं कु सखानेको भी मगवालो । सबसाथी पकुंचे
अंगिल्पर अबतुमभी अपना रसालो ॥ तनखूखा ● ॥
दो चार घडीया दो दिनमें अबतनसे जान निकलना है । य
ह हड्डी पसली जिननी है या गलनी है या जलनी है । देश
तजो वा क़ौथा ड़ोसी कोइ दम को यह भी ढलना है । चढ
धंधो कमर खवेरे से तुम को भी मंज़िल चलना है ॥ तन
खूखा ● ॥ यह दो जनका मन आवेगी मत इसको तुम
जंगीर करो । यह लाकबदनकी पाश है मन मार इसे अब
खोर करो । जो पार कुतारै दरया से उनबातों को गुरपीर
करो । अबनाव किनारे आ पकुंची अब चढने की तदबीर
करो ॥ तनखूखा ● ॥ कुछ देर नहीं अब चलने में या

आजचलेयाकल्हचलो। जोकपड़ाखनाजेनाहोसोजल
दीबांधसम्हलनिकलो। अबथानहीअबसुबहहुई
धूंआमपिघलकरढलनिकलो। क्यौंनाहक़धूपचढ़ाते
होवसठंढेहिठंढेचलनिकलो॥ ननहूखा ॥ यह
ऊंटगिरावेगायारोसंदूकजनाज़ाअर्थीहै। जबइसप
रहोअसवारचलेफिरघोड़ाहैनेहस्तीहै। किसनीद
पड़ेतुमसोतेहोयहबोझतुम्हाराभारीहै। कुछदेरनहीं
अबआहनज़ीरतैयारखड़ीअसवारीहै॥ ननहूखा
कुबड़ीपीठहुईघोड़ेपरज़ीनधरोबाबा। अबमौतनक़ा
राआवाज़ाचलनेकीफ़िकरकरोबाबा॥ २२॥ ॥ आ
थाकिसीशहरसेएकहंसविचारा। एकपेड़पैसहराके
कियाउसनेगुज़ारा। रहतेथेबहुतजानवरउसपेड़
केऊपर। इसनेभीकिसीशाखपेघरअपनासंवारा ॥ दे
खाजोनथेहैंनेउसकेऊनमेंकुछरंग। वहहंसलगासब
किनिगाहैंमेंपियारा। वाज़ौलघड़ेजुरओशाहींउस
आशिक़। शिकरोंनेभीअकरसेकियाउसकामुदारा ॥
ज़ागोकलंगमैनातूतीओताऊसोकबूतर। सबकरनेलगेउ
ससेमुहब्बतकाइशारा। कुछजालचिड़ेपोदनेपिद्देहीन

ऊड़ते। पिद्दड़ीभीसुमऊनींथीउसेआखकातारा ● सु
ऊबतजोबनीहंसमेंऔरजानवरोंमें। एकचंदऊआव
समुद्दबनकागुलारा ● उसहंसकोजबहोगएदो
हीनें। एकरोज़वहयारोंकीतरफ़कहयहपुकारा ● तो
यारोहमअबजावेंगेकलअपनेवतनको। अबतुमकोमुवा
रिकरहेयहपेड़तुम्हारा ● इसबातकेसुनतेहीजोहर
एककेऊड़ेचोंथ। बोलेकियहपुकीततोमत्तोंहमकोग
वारा ● हमजितनेंहैंसबसाथतुम्हारेहीचलेंगे। यह
रहैतोअबहंसनजावेगासहारा ● मेंजोअवेकूच
कीऊइसुबहनमूदार। परअ [illegible] रआ [illegible] उस
हंसनेमारा ● सबसाथउड़ेउसकेजोथेयार [illegible] वाह
[illegible] रएकनेउडनेकेलियेपंखपसारा ● दो [illegible] सऊड़ेथे
जोऊईमांदगीर [illegible] । फिरपरमेंकिसी [illegible]
तोयारा ● कोइतीनकोइ [illegible] र कोईपांच [illegible]
ह आठकोईनौकोईद [illegible] नेहारा ● कोइ
कोईव्हारहाकोईव्होऊआलाचार। कोइऔरउ [illegible]
गेजोथासबमेंकरारा ● चीलेंगिरींकोवेगिरेऔरवाके
भीथकगए। उसपहलोंहीमनज़िलमेंलिया [illegible] वतनोंकिना

ग ● सबरहगरजोसाथकेआथीथेनज़ीरआह। आ
जिरकेतईं दं रअकेबाहीनिधारा ॥ २३ ॥ ● ॥ क्योंकि
हैयाशैजिसे आजायबुढ़ापा। औरसेअजवांनीकेत
ईखायबुढ़ापा। अशरतकोनिखरुताकमैंगमलायबुढ़ापा
। हरकामकोहरवातकोनरसाथबुढ़ापा। सबचीजके
केहोनहैंबुराहायबुढ़ापा। आखिरकोतो अह्लाहने
दिखायबुढ़ापा ● जोलोगतुआमरसेबिठानेथेबड़ी
प्रहर। कालीसेंबपहतेथेमुहब्बतकोजताबहर। अ
बआकेबुढ़ापेने कथाहायथहकुछकहर। अबजिस
[illegible] सेज़हर ॥ सबचीजको ● ॥
आगेतोपरीरुखादहमैंरखतेथेक्यांघेर। आतथेचलेआप
कोलगतेथे क़रारदेर। अबआकेबुढ़ापेनेंकियाहायथह
कंधे [illegible] टेढ़केमिलतेथेसो। अबलोनेहैंमुहफेर ॥ २८
॥ थीजवनतई [illegible] आमजवांनीकोपरीरुख
[illegible] हमिमलतेथे [illegible] जिन्हेभूख। बैठेथेपरं
[illegible] नकथाहरारुख। अबक्याहैजोपलरुड़हुए
[illegible] रजाइभीगई रूख ॥ सबचीजको ● ॥ मकानमें
[illegible] वांनीकेते बागरहेंहे [illegible] कते। जुहलेंहेंबहारेंहेंपरी

कहैं हमकते । हम उ ाकानड्
न हइसे ग ़ रबतरते हैं हम सिरहे
● ॥ हमपांवपड़ें उनकेताहरगिज़नबुलाव । -
तोएकदम्मीं खफ़ा हो केउठावें । इतना तो कहां अवज़ा
कोई जामपिलावें । गर जांनिकलती होतोपानीनच
खावें ॥ सबचीज़को ● ॥ अ ऐशकेमहमानथेअवर
म्गें उसएज़ैफ़ । अबख़ूनजि खाते हैं नबपीतेहैं दोर
प्रा केचलतेथेसिपरबांधउठासैफ़ । बुटके
कोवा हीकेतई चलतेहैं सदहैफ़ ॥ सबचीज़को ● ॥ थे
हमभीजवानीकेबकुतई शुक्रमेंपगे हेग महरथे
जोहमनेनहीघूरे । अवआ केबुढ़ पने से
परउड़गयेदुमरहगई फिरतेहैं लंडूरे ॥
● ॥ आगेयेजहां ख़्वदनज़ौरयूसुफ़ेकं
मेंप्यार ने हैं कोटि ती । मर जावे
बकोई पानी । क्या हमें छोड़गई हा
सबचीज़को ● ॥ क्यायारो घट हमसेगर
न । जो प्रोख़ किथेदिलकीनिगाहैं केनिशाना । वे
कोई डाचकेदादाकाबहाना । इसकर कोई कहता है

18

॥

...को ॥ पूछैंजिसेकाहना

...आंवैं तोयहशुलहैकिकहांआन

...। बठैं तोयहहोधूमकहांवेठेहैबुड्डे। देखेंजि

सकहनाहैवहक्यादेखैहैबुड्डे॥ सबचीजको ॥ क्या

आरोकहैंगोकिबुढापाहैहमारा। परबूढेकहांनैंकानहीं

दिलमेंसहारा। जबबूढाहमैंहायजहांकहकेपुकारा

...काफिरलैंकलेजेमेंमेरो... सामारा॥ सबचीजको

॥ खूबांमेंअगरजावैंतोझोतीहैयहफकड़ी। ...चैहैको

ईहाथकोईछीनैंहैलकडी। मूछैंकहींवनीकेलियेजा

नींहैंपक... ...कीकोकोईखेंचकोईझाड़ेहैमकडी॥

...को... का...ताहैकोईछीनलोईसबुड्डेकीला

...हैकोईशोखकिआंखेंचलोडाढी। इनकी

...कोनहीं अबसंसकआती। क्याढूंढेओहो

...केनहीं... ॥ सबचीजको ॥ एकब

...अभीमस्केकर... ...नगिन्। मरबूबरी...

...मिलेबिन्। ...वक्तयहहैहायजोसबअरते

...थिन्। यारएकवेसेयामथेयारएकहैंयेदिन्॥ सब

चीजको ॥ बूढेंमेंअगरजावैंतोलगतानहींहांदिल।

ह्यांक्यौंकि लगेगी दिल तो है न ऽ व

में आवेंगे तो वे सब बड़े हैं मिल मिल

की पड़ी आन के मुशकिल ॥ सब चौक के ॥

को हमारी अगर असवारी गई है। तो यहां भी लगी साथ

यही ख़ारी गई है। सुनते हैं कि कहती यही पनिहारी ग

ई है। लो देखो बुढ़ापे में यह मन मारी गई है ॥ सब चौ

क के ॥ पगड़ी हो अम ... गुलाबी तो यह आफ़त

। क ... ता है ... र एक देखके क्या ख़ूब है रंगत। ठट्ठे में कोई

कहता है कर शक्ल पे रहमत। खा है लल्ला देखिये बुड्ढे कि

हिमाक़त ॥ सब चौक के ॥ मरत ... वे जावें तो यह

क़िलत है उठाना। छुटते ही बनेगा ... नका ... को रिझाना

। ... टें में अगर जावें तो मुशकिल है फिर आना। अब

... किसी जा नहीं बचने का ठिकाना ॥ सब चौक के ॥

द ... या के तमाशे को अगर जावेंगे ... यारो। ... कहता है हरेक

... के जाते हो कहां को। और हंस के शरारत से कोई पूछे

... खो। क्यौं ख़ैर है क्या ख़ ... र से मिलने को चले हो ॥

सब चौक के ॥ मर नाच में जावें तो यह हसरत है ...

ती। जो नाचे है का फ़िर सो नहीं ध्यान में लाती। औरों की त

इाने। परहमकोतेकाफ़िरबह
... सबचीज़को ॥ गरनाथका
...इमूळोसीकहाती। अबनवळंपैवेदहकुरह
अभीखाती। परीकीसीपुरंनोसोमुलाक़ातजनाती। य
ह क़हर है हमकोवहलाख़ुशनहीआती ॥ सबचीज़
को ॥ चकलेकेजोग्रंदरकीवहकहलाती हैंकसबी।
गरजन्मेंकभोजादेंत... हैख़राबी। मुहदेखतेदीक
हतीहैंमुबआवेबडेजी। क्याआशहोटहांपरनेक ...री
आमुरीदो ॥ सबचीज़को ॥ गरजावेंनवाबकमेंतो
चमरोंहैंसुनाने। क्याअशहोतुझरनहमेंकुरआनप
ढ़ाने। इस...रकोइ पूछेहैनिमाज़ोंकेदुगाने। ठट्ठेसेको
ईफेंकेहैलाबीहकेदाने ॥ सबचीज़को ॥ गरगुल
केकमरमेंग्रासेविरश्रानलगाहै। परदिलमेंतोगुल
बाकाबहीध्यानलगाहै। कहतेहैंजिसेहमकोयहअर
मानलगाहै। कहताहैवह...गुड्डेकोशहतोनलगा है
। सबचीज़को ॥ ...कोइइनपोपलेटानींद
...। चलकरकोइकुबडेकोतरहकदकोझुकावे। डाढ़ीक
तेकंगबीकोकोईचाकेनआवे। यहसारीतोग्रल्लाहकि

खोकोनदिखावे ॥ सबचीज़को

कियेधूम के। वैसेहीबुढ़ापेमें कुछ...

छड़गएकोफिरवहनिज़ारेवहग़मकें। अबऐश्व-

नीकीहैऔरबूढ़ोंकोधक्के ॥ सबचीज़को ● ॥ गरज़ि

इससेडाढ़ीकोख़िज़ाबअपनीलगावें। झुर्रीजोपड़ीमुह

पेहैं सेकौंकमिटावें। गोमकरसेंजसनेकेतईहांतबंधा

वें। गरचे... लड़ीछिलतीहफ्ताआकछिपावें॥ सबची

ज़के ● ॥ बूढ़ेऊपरऊसकीचाहमनहींछुटती ॥

...सेयहदीदारकीलज़्ज़तनहींछुटती। औरदिलसे

...महबूबोंकीउलफ़तनहींछुटती। सबछुटजाए

...दीदकीयहलतनहींछुटती ॥ सबचीज़को ● ॥ सु

नतेहोजवांनो यहसखुनकहतेहैंतुमसे। करलेहोजो

करलोबहमकेऐशोतरबके। जावेगीजवांनीतोफिर

अफ़सोसकरोगे। तुम... वैसेहीकभीतुमभीजवां

थे ॥ सबचीज़को ● ॥ ... तनमेंहोमाअश्फ़ूक़यहसब

यादरखोबात। जोहोसोकरेचाहनेवालोंकोमुदाम ...

अबहूबोगनीमतहैजवांनीकीयहऔक़ात। जबबूढ़े ...

एफिरतोवेहीछकके दोपात ॥ सबचीज़को ● ॥ अब

गहिवसंगदना । और जिससेमु
…गाहुबहदुदला । इस चर्खे …मगारने
नमेंहुसदला । क्या हमसे लिया छायजवानीकायह
मुदला ॥ सबचीज़को ● ॥ थेजैसेजवानीमेंपीयेजाम
छूवके । वैसेही बुढ़ापेमेंपिये घूंट लहूके । जब आकेगले
लगतेथेमहबूबभभूके । अबकहियेतोबुढ़ियाभी कोई मु
हपेनथूके ॥ सबचीज़को ● ॥ है ग्वालीनालीकोजना
नेंमेंजोचरचा । गरउनमें कभीआवेंतोहैयहखिलमश्रा
गा । डाढ़ीकोजुगनबोलेकोई आंखकोमटका । कहते
कोई कहताहैकौ अयमेरेदादा ॥ सबचीज़को ● ॥ ग
रआजकोहोतेवेजवानीकेज़माने । कुदरततथीजोथी
छेड़तेभड़ुएयेज़नाने । मुश्किलअभीपड़जातेइन्हें
पीछेछुड़ाने । मकदममेंअभीलगनेकहिआहिमचाने
॥ सबचीज़को ● ॥ यहहै … उनेअबयेपलेयारोहैंहमा
रे । इनहीठोंनेवोसोंके … हैंमारे । होतेथेजवां
… नोंपरियोंकेगुज़ारे । और अबतोचुड़ैलआफ़ेभी
… कलातनमारे ॥ सबचीज़को ● ॥ करतेथेजवानीमें
जोसबआपसेचाह । और उसदिखातेथेवहसबआ

पसेदिखाइ । यहक़हरबुढ़ापेनेकियाआकेनज़ोर
आह । अबकोईनहींपूछता अल्लाहही अल्लाह ॥ ब
चपनेकोहोताहैबुराहायबुढ़ापा । आशिक़कोतोअ
आहनदिखलायबुढ़ापा ॥ २४ ॥ ❁ ॥ कसबीजोनवा
इफ़कहींहोजातीहैबुढ़िया । औरजवानकहांनेखेवह
रहजातीहैबुढ़िया । हरकाममेंहरबातमेंशरमातीहैबु
ढ़िया । सिरधुनतीहैघबरातीहैपछतातीहैबुढ़िया । दि
नरातपड़ीसोचमेंग़मखातीहैबुढ़िया । यहदर्दवहीजा
नेजोहोजातीहैबुढ़िया ॥ जबमौहमभूकाथाजवानीकी
पोथेमय । अबशक्लबनीऐसीकिदेखआवेजिसेक़य । अ
फ़सोसयहकम्बख़्तबुढ़ापाहैबुरीशय । गरआगभीलें
नेकोकभीजावेतोहयहय । चिल्लाकेवहकहताहैकहां
आनीहैबुढ़िया ॥ यहदर्द ❁ ॥ जिसतनपैजवानीकीप
ड़ीफड़केथीबोटी । उसतनकोनकपड़ाहैनउसपैटके
रोटी । बालउड़केलटेंरहगईंकुछनोचीखसोटी । मि
स्सीहैनकाजलहैनकंघीहैनचोटी । सबबातसेदिलअ
पनावहतरसातीहैबुढ़िया ॥ यहदर्द ❁ ॥ थावक़्तज
वानीतोबड़ेमालकोपहुंचीं । कमख़्वावकोऔरताशको

औरशालकोपऊंचीं। आयाजोबुढ़ापातोफिरइसहा
लकोपऊंचीं। सिरहिलनेलगाचूंचियांपनालकोपऊं
चीं। यहहालऊआफिरतोकिसेभातीहैबुढ़िया॥ यह
दर्द ✽॥ नौचीजोवफ़ादारकोईपासरहेथा। तोरोटी
मिलेवरनेलगेकाननेचरखा। औरकुबड़ीकमरहोग
ईसिरहोगयागाला। मुहल्लककेचमरखऊआतनहो
गयातकला। इसदरजेकोआख़िरकोपऊंचजातीहैबु
ढ़िया॥ यहदर्द ✽॥ बुढ़ियाकोबुढ़ापेमेंयहदुखपड़
ताहैखेना। नौचीकोकिसीढबकीनसीहतहोजोदेना।
मुहपीटकेहमसाईसेकहतीहैकिभेना। नाहककोरख
वीहैनलेनाहैंनदेना। एकचारघड़ीसिरमुंडेपिठवाती
हैबुढ़िया॥ यहदर्द ✽॥ टुकदेखियोअययारोबुढ़ा
पेकीयहख़ारी। हमसाईकेसुननेहीलगीदिलमेंकटा
री। नौचीकीतरफ़दारहोघरमेंसेपुकारी। क्याबात
ऊईतुमसेवहमुजकोतोहतारी। जिसबातपेदोपहर
सेदर्शतीहैबुढ़िया॥ यहदर्द ✽॥ मैंक्याकऊंभेनाय
हमुज़रतीनहीछुड़ो। औरक़हरखुदासेभीयहडरती
नहीछुड़ो। जोभअपनीज़रावंदयहकरतीनहीछुड़ो।

क्यासख़्तमुसीबतहैयहमरतीनहींछूटो । इसदरदजेकी
आख़िरकोपऊंचजातीहैबुढ़िया ॥ यहदर्द ॥ ओ
ऐसीमेरेपीछेपड़ीजायगीझांपो । एकरोज़मुझेघरमें
सेनिकलायगीझांपो । सबखाचुकीअबमुझकोभीयहखा
यगीझांपो । वहकौनसादिनहोगाजोमरजायगीझां
पो । डायनसीनज़रअबतोमुझेआतीहैबुढ़िया ॥ यह
दर्द ॥ क्याबक़बुढ़ापेकाबुराहोगयाहैवल्लाह । वेगाने
तोक्याअपनोंकोफिररहतीनहींचाह । ख़्वारीसेबुरेहाल
सेवहकरतामेंजाकाह । इकइककेबुढ़ापेकोमुसीबतमें
नज़ीरआह । आख़िरकोइसीसोचमेंमरजातीहैबुढ़िया ।
यहदर्दवहीजानेजोहोजातोहैबुढ़िया ॥ २५ ॥ ॥
क्यादिनथेवेभीयारोथेहमभीजवकिबाले । निकलेथी
होकिदाईफिरनीकभीदहाले । चोटीकोईरखावेबन्धी
कोईपिन्हाले । हंसलीगलेमेंडालेमन्नतकोईबढ़ाले ।
मोटेहैंयाकिदुवलेगोरेहैंयाकिकाले । क्याऐशलूटतेहैं
मअ़सूमभोलेभाले ॥ जिसजिसतरहकीबातेंआकरयह
सेतेहैं । मावापइनकीबातेंसवाखिरमेंसुनतेहैं । जोन्या
भनेंथेपंत्रिंलेमुंहमेंठेलतेहैं । सीनेंपेचोटतेहैंगोदोंमें

खेलतेहैं। मचलेतोबापकेलेवेतोमामनावे ॥ क्याऐश
● ॥ दिलमेंकिसीकीहरगिज़नेग़मनेहुयाहै। आगाभी
खुलरहाहैपीछाभीखुलरहाहै। पहनेफिरेतोक्याहैनं
गेरहेतोक्याहै। यहांयोंभीवाहवाहैऔरवोंभीवाहवाहै
। कुछइसतरफ़सेलेलेकुछउसतरफ़सेखाले ॥ क्याऐ
श ● ॥ घरमेंहोयानहोवेपैसाइन्होंकोलेना। याखां
नालडूपेड़ेयाचाबनाचबेना। मांबापकेजोसिरपरआका
रपड़ेसोखेलना। इनकोतोफिरकिसीकालेनानकुछहैदे
ना। रोटीकोईखिलावेपानीकोईपिलावे ॥ क्या ● ॥ ने
चूनडैंकोढपैंनेकूनकोछुपाए। हरआनन्नरमुजर्रदआ
शिक़बनेबनाए। हरआनमेंसफ़ाचटहरदमघुटेघुटा
ए। अल्लाहकेक़लंदरख़ासेमुडेमुडाए। चाहेकोईचं
खालेचाहेकोईरुलाले ॥ क्या ● ॥ मरजावेकोईतोभीकु
छइनकोग़मनकरना। जोजानेकुछबिगड़नानेसंभमेंकुछ
संवरना। इनकीबलासेघरमेंहोकिदयाकेधरना। जिस
बातपरयहमचलैंफिरवहहीकरगुज़रना। माओकनी
कोबाबापगड़ीकोबेचडाले ॥ क्या ● ॥ जोचीजकोईदेवे
तिनहाथओटतेहैं। गुड़बेरमूलीगाजरलेमुहमेंखोटवे

हैं। बावाकोमूछमाकेओटेखसोटतेहैं। गरदोमेंअट
रहेहैंखाकोंमेंलोटतेहैं। कुछ्मिलगयासेखालेकुछ
नगयाचबाले ॥ क्या ● ॥ कोइनकोदोसोखालेंफोका
होयासबोंना। परयानकुछपलंगकीनेचाहियेबिछों
ना। जिसजापेनीदआईफिरव्हांइंइनकोसोंना। दें
बादशासेवहुतरजबमिलगयाखिलोंना। भेंपूकोईवजा
लेफिरकीकोईफिराले ॥ क्या ● ॥ यहबालापनका
थारेआलमअजवबनाहै। यहजवबहहैइसमेंजोहै
सोबादशाहै। औरसचअगरचेपूछोतोबादशाभीक्या
है। अबतोनज़ीरसबकोमेंरीयहीदुआहै। जोतेरहैं
सबोंकेआसोमुरादवाले ● क्याऐशलूटतेहैंमअसूम
भोलेभाले ॥ २६ ॥ ● ॥ जबमाहअघन्काढलनाहो
तबदेखबहारेंजाड़ेकी। औरहंसहंसपूसंसम्हलना
होतबदेखबहारेंजाड़ेकी। दिनजलदीजलदीचल
नाहोतबदेखबहारेंजाड़ेकी। पालाभीवर्फ़उगलताहो
तबदेखबहारेंजाड़ेकी। चिल्लाग़मठोकउछलनाहो
तबदेखबहारेंजाड़ेकी ● तनठोकरमारपछाड़ाहोऔ
रदिलसेहोतीहोकुश्ती। थरथरकाज़ोरअखाड़ाहो

औरबजतीहोसबबनौबी। होशोरअहोहोहोहोकाऔ
रधूममचीहोसीसीकी। कल्लेपरकल्लालगलगकरचल
तीहोमुहमेंचक्कीसी। हरदांतचनेसेदलताहोतबदे
खबहारेंजाड़ेकी ✿ हरएकमकांपरसरदीनेआबांध
दियाहोयहचक्कर। जोहरदमकपकपहोतीहोहरआ
नकड़ाकड़औरथरथर। पैठीहोसरदीरगरगमेंऔरब
र्फ़निकलताहोपत्थर। झड़बांधमहावटपड़तीहोऔर
तिसपरलहरेंलेलेकर। सन्नाटाबावकाचलताहोतब
देखबहारेंजाड़ेकी ✿ हरचारतरफसेसरदीहोऔर
सहनखुलाहोकोठेका। औरतनमेंनीमाशबनमकाहो
जिसमेंखसकाअतरलगा। छिड़कावहुआहोपानीका
औरखूबपलंगभीहोभीगा। हाथोंमेंप्यालाशरबतका
होआगेएकफ़र्राशखड़ा। फ़र्राशभीपंखाजलताहोतबदे
खबहारेंजाड़ेकी ✿ अबसेसीसरदीहोअयदिलतन
सेरमकेकोधानेंहो। कुछनरमबिछौनेमखमलकेकुछ
पेशमकीलंबीरातेंहों। महबूबगलेसेखेलपड़ाहोऔरकु
छनीचुटकीजातेंहों। कुछवोसेमिलतेजातेहोंकुछमी
ठीमीठीबातेंहों। दिलसेअंतरबमेंपलताहोतबदेखब

हारें जाड़े की ❁ हो फ़र्श बिछा ग़ालीचों का और पर्दे
छूटे हों आकर । एक तरफ़ अंगीठी जलती हो और अम्बर
तैयार हो तकिये पर । वह दिलबर शोख़ परीचंचल है धूम
मची जिसकी घर घर । रेशम की नर्म निहालों में सौ नाज़
अदा से हंस हंस कर । पहलू के बीच मचलता हो तब देख
बहारें जाड़े की ❁ तरकीब बनी हो मजलिस की और
काफ़िर नाचने वाले हों । मुंह उनके चांद के टुकड़े से तन
नर्म रुई के गाले हों । पोशाकें नाज़ुक रंगों की और ओढ़े शा
ल दुशाले हों । कुछ नाच और राग की धूमें हों कुछ ऐश में
हम मतवाले हों । प्याले पर प्याला चलता हो तब देख बहा
रैं जाड़े की ❁ फिर एक कमर का हो ग़ुलबदन का और ऐश की स
ब तैयारी हो । वह जान कि जिससे जी ग़श हो सौ नाज़ से
आ जन काई हो । दिल देख नज़ीर उसकी छबको हर आ
न अदा पर वारी हो । सब ऐश मुहैय्या हो आकर जिस जि
स अरमान की बारी हो । वह सब अरमान निकलता हो
तब देख बहारें जाड़े की ॥ २७ ॥ ❁ ॥ आलम में जब
बहार की आकर रखन्त हो । दिल को नई लगन की म
स्ती की लगन्त हो । महबूब दिलबरों से निगह की लड़न्त

हो। इशरतहैसुखहैऐशहैऔरऔनिचंतहै। ।
जबदेखीयेबसंतकिफैसीबसंतहै ● अबखतोक़ज़ाफ़िरांसे
मकांक़र्दज़र्दहैं। सहराओबागोअहलजहांज़र्दकर्द
हैं। जोड़ेबसंतीयेंसेतुनांज़र्दज़र्दहैं। एकदम्मतो
सबज़मीनोआसमांज़र्दज़र्दहैं॥ जबदे ●॥ मैदांहेसब
क्याकिचमकतीमीरेतहै। साक़ीभीअपनेजामसुराही
समेतहै। कोईनशेमेंमस्तहैकोईसुचेतहै। दिल
बरगलेसेलिपटाहैसरसोंकाखेतहै॥ जब ●॥ आंखें
मेंकारहेहैंबहारोंकेआनेरंग। मह्बूबगुलबदनभीखि
चेहैंबरासमेतंग। बजतेहैंतालढोलकोसारंगीओमु
हचंग। चलतेहैंजामऐशकेहोतेहैंरंगढंग॥ जब ●
॥ चारौंतरफ़सेऐशतरबकेनिशानहैं। सुथरेबिछेहैंफ़
र्शधरेहारपानहैं। बैठेक़रेबग़लमेंकईआहजानहैं।
। परदेपड़ेहैंज़र्दसुनहरेमकानहैं॥ जब ●॥ क
सरनसेतायफ़ोंकीमचीहैउलटपलट। चोलीकिसीकी
मस्तकिहैअंगियारहीहैफट। बैठीहैंबनकेनाज़नीप
रीयेंकेग़टकेग़ट। जातीहैंदौड़दौड़गलेसेलिपटलिपट
॥ जब ●॥ खुमकीकहींभमकहैकहींजामकीछलक।

कोसर्वेगुलिरुख़सार। औरउनकेसाथहज़ारोंहैंदेखने
कोबहार। कोईहैसुर्ख़कोईज़र्दऔरकोईगुलिनार
।ग़रज़किफूलरहीहैहरेकजागुलज़ार।जिधरकोदे
खोउधरगुलखिलानहोलीमें ● नशेमेंकितनेतोमस्त
अमूकहैंगेमनवाले। जिलोमेंउनकीहज़ारोंहैंघूरनेवा
ले। किसीकेहाथमेंशीशेकिसीकेहैंप्याले। किसीनेहा
थगलेमेंकिसीकेहैंडाले। करेंहैंऐशसभीमेंकशानहो
लीमें ● कोईतोबांधेहैदस्तारसुर्ख़गुलनारी। किसी
केहाथमेंहैगागुलालपिचकारी। किसीकोरंगमेंपोशा
क़र्कहैसारी। किसीकेगालपेहैसुर्ख़रंगकीधारी।
अजबबहारजोठहरीहेआनहोलीमें ● कहींजोदेखो
तोहैंनाज़नीबहुतचंचल। किजिसकेदेखेसेआशिक़
कादिलनआवेकल। गलेऔरबाज़ूमेंपहनेहैनौरतन
हैकाल। चलेजोशहकमरमेंपड़ेहैसैसीवल। हैइसतर
हकाबहनाकुकमियांनहोलीमें ● तमामशहरमेंहरसू
मचीहैंरंगरलियां। गुलालअबीरसेगुलज़ारहैंसभीग
लियां। कोईकिसीकेसाथतररहाहैअचपलियां। ग़रज़
केज़ोरहवाऐंहैंऐशकीचलियां। किसीकोऐशलि

छनध्यानहोलीमें ❁ नज़ीरहोलीतोहरजापैहोरही
हैगी। परहमनेसैरयहएकबाग़मेंअजबदेखी। दिखा
रैंबाग़कीअजबदरसुनहरीनक़्क़ाशी। औरउसकेबीचमें
एकतोवहांरबारहदरी। ज़रीकाउसपैखिचाशायवां
नहोलीमें ❁ हरेकनेअपनीमुवाफ़िक़दियाहैफ़र्शबि
छा। खुशीसेबैठाकुआसैरबाग़कीकरता। हैभीड़भाड़
काअवहइसजुहूरकाचरचा। किबीचबाग़केतिलधरने
कोरहीनहिजा। रहानकोईभीख़ालीमकानहोलीमें
❁ हुईहैंकितनेपरीज़ादरुगवचोंकीदुकान। तरह
तरहकीशराबोंकाहैकियासामान। कोईकहैहैकिमेरी
गुलाबीभरदेजान। रुपयेअशरफ़ीकाइसक़दरबर
सेहैबारांन। किवहदुकानहुईज़रकीखानहोलीमें ❁
औरकितनेऐसेहैंहुरतकोउनकेमतवाले। किउनकी
आखोंसेपीतेहैंदम्बदम्प्याले। कहेहैंहायरेइनज़ा
लिमोंनेघरघाले। कहींहज़ारोंवहलाखोंहैंदेखनेवा
ले। खड़ेहैंसाम्हनेघेरेदुकानहोलीमें ❁ हलारोखोन्चे
वालेफिरेंहैंलालोंलाल। पुकारतेहैंमिठाईहैऔरमोठ
कीदाला। तंबोलीबैठेहैंबीड़ोंसेअपनामुहकरलाल।

कोई पुकारे है क्या ज़ोर है नशे रंग लाल। कोई नशा कोई
खाता है पान होली में ❁ खड़े हैं नाज़नी लड़के तमाम गुल
अज़ार। जिधर को देखो उधर हो रही है बाग़ बहार
। जिन्हों कोई इश्क़ का लड़कों के है बहुत आज़ार। वे उन
के साथ फिरैं हैं ख़राब ख़स्ता ख़ार। बनें हैं उनके वे सब पा
सबान होली में ❁ जो कितने इश्क़ में लड़कों के सख़्त मुफ़
लिस हैं। वे आंखें फाड़ के ऐसे उन्हें खड़े घूरैं। कि जैसे
काल में थे भूखे देखने नाने। कभी जो बस चले लौंडे को कर
खा जावैं। तो उनके कितने मरोड़ें हैं कान होली में ❁ को
इ तो उस में अपने कहे मैं गुलशन हूं। कोई बहार दिखा
कर कहे मैं लालन हूं। लुभा के दिल को कोई बोला मैं तो मो
हन हूं। कोई पुकारे है आशिक़ कि मैं भी बांह्मन हूं। दि
ला ओ अब कोई बोसे का दान होली में ❁ वे है जो बाग़ के
भी रंग से भरे तैयार। जो रंडियां थीं नवाइफ़ उन्हों में डा
ली पछाड़। लिपट गई जो बदन में महीं नतंग इज़ार।
तो आगे पीछे अजब तौर की हुई गुलज़ार। दिखाई दे
गये दोनों मकान होली में ❁ किसी के देख के पानी जो मुंह
में भर आया। वह होली खेलने को उस के साथ जा लिपटा

। गुलालडालकेनारंगीयौंकोमलनेलगा । औरउन्नेगु
स्सेमेंआकरजड़ाजोएकधप्पा । तोकुककेमलनेलगा
उसकीशांनहोलीमें ● उसेजोमलनेसेरांनोंकोगुदगुदी
छूटी । हज़ारौंगालियांदेदेकेवहछुड़ानेलगी । नछो
ड़ाइसनेतोआपसमेंऐसीकुश्तीहुई । कभीयहउसके
ऊपरऔरकभीवहइसपैहुई । मलेजोउसनेइसके
गौनौंथानहोलीमें ● जोधरकेदाबेतोयहबिलबिलाके
चिल्लाया । पुकारादौड़ियोयारोयहक्यासितमआया ।
जोऔरबसनचलागालीयांसुनानेलगा । कराजोऔरभी
दाबेतोशोरकरबोला । किखंदीछोडदेनिकलेहैजान
होलीमें ● कोईकिसीकेऊपरलाघड़ालुढ़ाताहै । कोई
गुलालकिसीमुहपैफैंकजाताहै । कोईकिसीकेतईंगा
लियांसुनाताहै । मुवाफ़िकअपनेहरेकहोलीकामना
ताहै । ग़रज़ाकिदैनौंबनीआनबानहोलीमें ॥ ३१ ॥
● ॥ नहोक्योंकरजांहांयारोख़बरऔरख़ेरआंधीमें । कि
बनकेबावलेफिरतेहैंबनकेशेरआंधीमें । लगीलैनैंजो
कबदामनहवाआघेरआंधीमें । बघूलेउठचुकेथेऔरन
थीकुछदेरआंधीमें । किहमछेयारसेआहोगईमुटभे

रेआंधीमें ● कहाहमनेअजीकुछख़ैरहैजातीहोतुम
कीधर । हवापरभीतुम्हेंकुछहैनज़रअयनाज़नींदिल
बर । चलोभागोशिताबीवरनेआंधीआचुकीसिरपर । दि
खाकरख़ाकउड़नाऔरआताझरगर्दकाचक्कर । वोंहीं
हमलेचलेउसगुलबदनकोफेरआंधीमें ● यहसुनते
हीफिरऐंडकरवहचंचलनाज़नीगुस्से । चलीइस
चालसेकाफ़िरकिमैंशादिलगयागशहो । किइतनेहीं
मेंएकऐसाअंधेराहोगयायारो । रफ़ीकोंनेजोदेखायह
उड़ाकरलेचलाइसको । पुकारेहाययहकैसाऊआअंधे
रेआंधीमें ● यहकहकरखड़खड़ातेगोशिपरऔरमिलके
सबदौड़े । पुकारेजीजियोजानेंनपावेइसकोढ[illegible]दौड़े ।
कहांकादौड़नाऔरकिसकालेनाहमजोघरभागे । वह
दौड़ेपरबहुतलेकिनउन्हेंआंधीमेंक्यासूझे । ग़रज़ह
मउसपरीकोघरमेंलाएघेरआंधीमें ● इसआंधीने
नेगुलशनकरदीयायारोमेरेघरको । बिछायाशादहो
मैंनेपलंगपरझाड़बिस्तरको । सुराहीकीख़बरलीऔर
सम्हालाजाकेसाग़रको । उठाकरताक़सेशीशालगाछा
तीसेदिलबरको । नशोंमेंऐशमेंक्याक्याकियादिलसेरआं

धीमें ● चमनसाखिलगयायाशेमेरेकोठेकेजीनेपर । ऊ
ई पंखोंकीमारमारगरमीकेपसीनेपर । लगेजबऐशअ
ष्मारतफिरतेहैंनेइसक़रीनेपर । कभीवोसेकभीछातीपै
हाथऔरगाहसीनेपर । लगेलुटनेमज़ेंकेसंगतरे और
फेरआंधीमें ● वहठहरीजबतोफिरव्हांऐशकेबादलल
गेघिरने । जोडूबीहूसरतेंथीदिलमेंसबउसदमलगीति
रने । लिपटकीठहरीऔरआहाथसीनेपरलगेफिरने ।
मज़ेऐशोतरबलज़्ज़तलगेयौंटूटकरगिरने । किजैसेवा
रिशमेंमेंयौंकहैंविंछेरआंधीमें ● इसआंधीमेंअहाहाहाअ
ज़बहमनेमज़ेमारे । फ़लकपरऐशअशरतकेदिखाई
देगए तारे । रक़ीबोंकोभीअब ख़्वारीख़राबीक्याकहूंबारे
। तलेकोठेकेबैठेछटगएसबगर्दकेमारे । गईनथनोंमें
उनकेख़ाकदरदसरोरआंधीमें ● किसीनेदौड़करज
ल्दीएंजाघरकालीयाआंगन । गिराकोईगढ़ेमेंऔरल
गादिखलानेढंगड़ापन । किसीकीउडगईपगड़ीकि
सीकाफटगयादामन । किसीकोछिनगएकपड़ेउच
कोंकीगईव्हांबन । गईछालऔरकिसीकीगिरपड़ीश
मशेरआंधीमें ● यहदिनआंधीकेयौंतोगरचेयौंमें

हैाश्रखेतेहैं। जिन्हेंहैऐश्रवहश्रांधीमेंभीमोमीपिरोतें
हैं। मर्द्र हैंजिनकोहंसतेहैंजिन्हेंदुखहैवेरोतेहैं।
मज़ीरश्रांधीमेंकहतेहैंकिश्रकबरदेवहोतेहैं। मियां
हमकोलोलेजातीहैंपरियांघेरश्राधीमें ॥ ३२ ॥ ● ॥
बरसातकाजहांमेंजोलश्करफिसलपड़ा। बादलह
रेकतरफ़सेहवापरफिसलपड़ा। ऊड़ियैांकामेहश्रा
केसरासरफिसलपड़ा। छत्ताकिसीकाश्रोरमचाकरफि
सलपड़ा। कोठाझुकाश्रटारीगिरीदरफिसलपड़ा ●
जिनकेनयेबनेहैंमकांश्रोरमहलसरा। उनकीछतेंट
पकतीहैंचलनीहोजावजा। दीवारेंझूमतीहैंकलैाकाहै
गुलमचा। लाठीकोटेकबारजोसिंतूहैखड़ातोक्या। छ
ज्जागिरामुडेरकापत्थरफिसलपड़ा ● बारांजबश्राकेस
ख़्तमकानोंकोहिलहिलाय। बोदामकांफिरउसकीभ
लाक्योंकिनाबलाय। छप्परोंपडीमेंश्राकेमचीहैयहवाय
वाय। कहतेहैंयारोदौड़ियोजल्दीसेहायहाय। पाखे
पछीतसेगएछप्परफिसलपड़ा ● कूचेमेंकोईश्रोरको
ईबाज़ारमेंगिरा। कोईगढ़ेमेंगिरकेहैकीचड़मेंलोटता
। रस्तेकेबीचपांवकिसीकारपटगया। श्रोरसबजगहकेगि

रनैंसेआयाजोबचबचा। वहअपनेघरकेसहनमेंआक
रफिसलपड़ा ❁ देखोजिधरउधरकोयहीगुलपुकार
है। कोईगिराहैऔरकोईकीचड़मेंख़्वारहै। प्यादाउ
ठाहैमरकेतोपछड़ासवारहै। गिरनेकीधूमधामयह
कुछबेशुमारहै। जोहाथीरपटाऊंटगिराख़रफिसलप
ड़ा ❁ दलदलजोहोरहीहैहरेकजापैरसमसी। मर
मरउठाहैमर्दतोऔरतरहीफसी। क्यासख़्तमुश्किलआ
नहैक्यासख़्तबेबसी। उसकीबड़ीख़राबीहुईऔरमची
हंसी। जोअपनीआजुरूरकेअंदरफिसलपड़ा ❁ चि
कनीज़मीनव्हांतईकुछहैयहबेशुमार। कैसाहीहो
शदारहोपरफिसलैएकबार। आक़ाकावसहैइसमेंन
नौकरकाइख़्तियार। कूचेगलीमेंहरकहींदेखाजोए
कबार। आक़ाजोडिगमिगायातोनौकरफिसलपड़ा ❁
गिरताहैआकेरंडीजोकसबीकागरमकां। औरउसके
आशनाकीभीछतगिरतीहैजहां। कहताहैठट्ठेबाज़ह
रिकउनसेआकेव्हां। क्याछतकोबैठेरोतेहोतुमइसज
गहमियां। व्हांछतलगनकीआपकासबघरफिसल
पड़ा ❁ रंडीजोनाचनैकोचलीकोइख़ुशजमाल। भडु

अभीसाथउसकेचलाचाल़कोसम्हाल। आयाक़दमत
लेजोफिसलनीज़मींकाढाल। रंडीनेऊहकरकेउध
रगिरपड़ीनिढाल। भडुआइधरकोहाययहकहकर
फिसलपडा ◎ आक़िलजोरंडीबाज़कहाताथाकोईज़
रा। रंडीजहांगिरीतोवहींआपभीगिरा। जोनाड़बाज़
थेवेपुकारेयहजाबजा। यांरोयहजायग़ौरहैदेखो
तोकुक़ूरा। बनियेंकाबेटाकुछतोसमंझकरफिसलप
ड़ा ◎ औरजिसकिसीकेदिलकोहैलड़केतनकीचा
ह। निकलावहसाथलड़केकीचडमेंहोतबाह। उल
फ़तकीअपनेंचाहजतानेंकोख़ामख़ाह। लड़कागिराजो
आगेतोपीछेसेयहभीआह। बेइख़्तियारउसकोबराब
रफिसलपडा ◎ करतोहैहरकिसीकोफ़िसलनीज़मीं
नख़ार। आशिक़कोपरदिखातीहैकुछज़ोरहीबहार।
आयाजोसाम्हनेंकोईमहबूबगुलोज़ार। गिरनेकाकर
केमकरउछलकूदएकबार। उसशोख़गुलबदनसेलि
पटकरफिसलपड़ा ◎ बिसनीजोइसहवामेंकोईनुक़
सेचीनहै। कहताहैउससेरंडीजोसुहबतक़रीनहै।
अबतोयहफ़ुर्ज़याकिफिसलनीज़मीनहै। तुमकोतक़

हकैजानेकाअंदरयक़ीनहै। परमैंनाजानताहूंकिवाह
रफिसलपड़ा ● कीचड़सेहरमकांकीनोबचनाहुआफि
र। औरऊबदिखाईदीखुलेबालोंकीएकंघटा। बिज
लीबीचमकीऊनकीमेंहबरसानाहुका। फिसलनअब
ऐसीआईनेफिरकुछनबसचला। आख़िरकोन्हानज़ी
रभीआकरफिसलपड़ा ॥ ३३ ॥ ● ॥ अबपैरनेकीरुत
मेंहलदारपैरतेहैं। आशिक़भीसाथउनकेगमख्वारपै
रतेहैं। भोलेस्वियांनेनाहांऊशियारपैरतेहैं। पीरोजवां
नलड़केऐयारपैरतेहैं। मुफ़लिसग़रीबअदनाक़र
दारपैरतेहैं। इसआगरेमेंक्याक्याअयवारतेहैं ● ले
शेख़नावसैयदमुग़लोपठानयकसर। रजपूतबनि
येंवाह्मनऔरखत्रीओनागर। कश्मीरीयानेकाय
थऔरपेशेवरसरासर। जोगीफ़क़ीरचेलेउमराअमीर
चाकर। बांकेऔटेढ़ेतिरछेबलदारपैरतेहैं ॥ इस ●
॥ बरसातमेंजोआकरचढ़ताहैख़ूबदरया। हरजाखु
रीओचद्दरबंदऔरनांदचकवा। मेंफ़ाभवरउछालन
चकरासमेटमाला। बैंडागंभीरतख़ताकट्टेपछाड़गर्रा।
न्हांभीऊनरसेअपनेऊशयारपैररतेहैं ॥ इस ● ॥ कि

रनैंछेलेकेयाशेसहजाकातापियाला। छत्तरीसेबुजेंख़ू
जीटाशकाचैंतश्क्या। महताबबाग़सेयदटीलेश्रौफ़िवा
होशा। अम्बोहऊजूमचैंमेंशुलश्रोरशेरचरचा। ह
र जाख़ुशीकेकरकरश्रतवारपैरतेहैं॥ इस ❁ वाहे
हकीमश्रौरजोखेदासकापमनहै। इनमेंजगहजग
हपरमजलिसहैश्रंजुमनहै। मेवेमिठाइखानेश्रौर
नाचदिलबगनहै। कुछपैरनेकोधूमेंकुछऐशकाचल
नहै। इनख़ूबियोंसेहरदमहरयारपैरतेहैं॥ इस
❁ ॥ तिरवैनीमेंश्रहाहाहोतीहैंक्याबहारैं। ख़लक़तके
ठठहज़ारोंपेशककीक़तारैं। पैरैंनहांवैंउछलैंकूदैंलड़ैं
पुकारैं। लतीश्रोछीटशोनेखाखाकेहाथमारैं। हरदम
ख़ुशीमेंहोकरहरबारपैरतेहैं॥ इस ❁ ॥ कुछजोंहरि
योंकेलड़केकुछसाऊकारबच्चे। मोनेकेतनमेंगहनेका
नोमेंमोतीलच्छे। कितनेतोश्रोखपक्केकितनेग़रीबकच्चे।
जमनाकेबीचक्याक्याहोतेहैंखचमरछे। किसकिसलप
क़रूपकसेख़ूंख़ारपैरतेहैं॥ इस ❁ ॥ संबुलसेबालबि
खरेश्रौरगुलसेगालरंगीं। नरगिससीश्रांखेंप्यारीकद
मिस्लिसर्वसीमीं। फूलैंासीछड़ियांबांहैंश्रौरउंगलीयां

निगारीं। सिरपरगुलाबीहूईऔरसोंसनीसुनहरी।
जमनाकेबीचगोयागुलजारपैरतेहैं ॥ इस ❁ ॥ कि
तनेतोगुलरुख़ोकेहाथोंमेंहाथगहते। जातेहैंचुपकेचु
पकेकांधोंपेबोझसहते। कितनेखुशीकीबातेंहैंगुलमचा
केकहते। पानीपैइ सस़फ़ासेजातेहैंसाफ़ रहते। जै
सेहवाकेऊपरपरदारपैरतेहैं ॥ इस ❁ ॥ कितनेख
ड़ेहीपैरैं अपनादिखाकेसींना। सींनाचमकरहाहैही
रेकाजोंनगीना। आधेबदनपैपानीआधेपैहैपसीना।
बहकरचलाहैगोयासैंकाइकक़रीना। दावन्कमरसे
बांधेदसतारपैरतेहैं ॥ इस ❁ ॥ पानीमेंकितनेयारोजा
तेहैंसाफ़सोते। कितनोंकेहाथपिंजरेकितनोंकेहाथतो
ते। कितनेपतंगउड़ावेंकंठीकईपरोते। उन्होंकेदम
उड़ावेंहंसहंसकेशादहोते। सौसौहुनरकेकरकारवि
स्तारपैरतेहैं ॥ इस ❁ ॥ कितनेतोसिरखुलीसेदिख
लाकेबालपैरैं। बुरजोंसेकूदकितनेतनकोसंम्हालदैरैं
। बाक़ीकलासेकितनेपानीउछालपैरैं। बहतेचढ़ाऊ
सीधेचितमोरचालपैरैं। लाखोंहुनरकेकरकरआसा
नपैरतेहैं ॥ इस ❁ ॥ मश्कोंकेऔरघड़ोंकेतोंबोंकेकई

छकड़े । सबअपनेग़ोलबांधेंकमरोंकोख़ूबजकड़े । बि
कुसेकटारजमधरबांकउंगलीयोंमेंपकड़े । हाथोंमेंगु
र्ज़ मोटेकांधोंपैलट्ठलकडे । जंगोजदलकेहोकरतैयार
पैरतेहैं ॥ इस ॥ ग़ोलोंसेजबकेआकरपानीकरेहैतं
गी । क्याक्याउछलउछलकारकरतेहैंशोरसंगी । आ
पसमेंजबतोआकरहोतीहैखानेजंगी । चलतेहैंगुर्ज़
मोटेओरलट्ठहफ़तरंगी । किसकिसलपकझपकसेक
रवारपैरतेहैं ॥ इस ॥ हरआनबोलतेहैंसैयदअमी
रकीजै । फिरबिसकेबादअपनेउस्तादपीरकीजै । मो
शमुकटकन्हैयाजमनाकेनीरकीजै । फिरग़ोलकेसब
अपनेखुरदोकबीरकीजै । सोसोख़ुशीमेंहोकरसरशार
पैरतेहैं ॥ इस ॥ क्याक्यानज़ीरयहांकेहैंपैरनेमेंबानी
। हैजिसकेपैरनेकीमुलकोंमेंआनमानी । उस्तादऔ
रखलीफ़ेशागिर्दयारजानी । सबख़ुशरहेंजहांतकजम
नाकेबीचपानी । हरदमख़ुशीमेंहोकरसरशारपैरतेहैं
। इसआगरेमेंक्याक्याआयआरपैरतेहैं ॥ ३४ ॥ ॥
लियेफिरताहैयोंतोहरबशरबचागिलहरीका । हरेक
उस्तादकेरहताहैघरबचागिलहरीका । यहहैअबतो

हमाराइसकदरबच्चागिलहरीका। दिखावैंहमकिसी
लड़केकोगरबच्चागिलहरीका। वहआकरलोटजावेदे
खकरबच्चागिलहरीका ● सुपेदीमेंजोकालीधारियां
ऐसीरहींवनबन। किजैसेगालपरलड़कोंकेहोवैंजु
लफ़कीनागन। किनारीदारपट्टाजिसमेंघुंघुरूकररहे
झनझन। गलेमेंहंसलीयांकानोंमेंदुरऔरनाकमेंलटक
न। रहाखिरपांवसेगहनेमेंभरबच्चागिलहरीका। वे
छोटेछोटेहाथऔरमुंहवहछोटासाअहाहाहा। और
उनछोटेसेदांतोंमेंलियापेड़ाहाहाहा। वहदुमफुंदना
सीऔरबूटासाक़दउसकाअहाहाहा। ज्योंहीलड़केने
देखाहोकेग़शबोलाअहाहाहा। मींयांसाहिबलेआओ
टुकइधरबच्चागिलहरीका ● वहींउसपासजाकरहम
नेइसबच्चेकोदिखलाया। वहकैसाहीसयानाथापरउ
सदमजेबमेंआया। घड़ीदोचारतकवोसेलियेछातीसे
लिपटाया। मकांख़ालीअगरपायातोकुछकुछऔरठहर
या। यहकुदरतरखताहैअशरतकेकुनबच्चागिलहरीका
● कोईलड़काजोइसकोदेखकरख़ूबरततरसताहै। को
ईरोताहैहठकरऔरकोईमुंहदेखहंसताहै। कोईआ

नाहैदौड़ाऔर किसीकेदिलमेंबसताहै। कोईदेताहैवो
सेऔरकोईफंदेमेंफसताहै । ग़रज़जातेहैंहमलेकर
जिधरबच्चागिलहरीका ● किसीसरदारकेदिलमेंयह
आयाएकदिनयारो । किदेखेंघरबुलाकरलंबडेवाऊँ।
केऊनरएकदो। कहाउसनेंकिहांइसछबकोउस्तादैं।
कोलेआओ। वहनौकरउसकासबमेंढूंढचुनकरलेग
याहमको। नथाहमपासकुछउसदम मगरबच्चागिल
हरीका ● जोदेखेतोबुरीहूरतबुराहालऔरफटेक
पड़े । बढ़ेडाढ़ीकेबालऔरबदरंगमुंहआंखोंमेंआंसूसे
। बंधीमैलीसीपगड़ीसिरपैऔर टुकड़ेअंगरखेके। वे
कपड़ेगोफटेथेपरहमअपनेफ़नमेंपूरेथे। लगारख
लेथेऐसेवक़्तपरबच्चागिलहरीका ● जौंईउसनेहमें
व्हांइसबुरेअहवालमेंदेखा। कहादिलमेंकिफसताहै
गाइनसेकिसतरहछड़का । नज़रसेउसकीहमनेजब
वहांइसबालकोताड़ा। कमरकोदेखढूंढोजेबपगड़ीको
टटोलउसजा। वोहींहमनेनिकालाढूंढकरबच्चागिल
हरीका ● कहींबैठाथाव्हांउसकाबरसवारहकाएकल
डका। नहमैंगुदगुदाबच्चापरीकाचांदकाटुकड़ा।

जोंहीं उसनेयहबच्चाहाथमें लेकरनज़रदेखा। वोंहीं
लट्टूहोकरबोलायहीलूंगायहीलूंगा। बिठादो। जलदी
मेरेहाथपरबच्चागिलहरीका ● यहकहकरबेक़रा
रीसेवहलड़काशौक़मेंग़र्क़हो। वोहींघबराकेआपउं
चाजहांहमथेखड़ेयारो। लगासैमिन्नतोंसेमांगनेसाहि
बयहहमकोदो। वहबापउसकापुकारहांनिकालोजं
लदबेइसको। ग़ज़बरखताहैजादूकाअसरबच्चागिल
हरीका ● लगाफिरहमसेकहनेहांजोवसहमनेतु
म्हेंजाना। कुंनरजोकुछतुम्हाराथावहीसबमैंनेपहचां
ना। दिखाबच्चाकियातुमनेमेरेलड़केकोदीवाना। ख़ुदा
केवास्तेतुमफिरइधरनआरीफ़मतलाना। चलोजाओं
कहींलेकरउधरबच्चागिलहरीका ● चलेहमवहांसेउ
सलड़केनेआंखोंमेंभरेआंसू। लगाबापउसकाकहने
तबहरेककोदेखकरहरसू। फ़क़ीरोंकरनईनसेआके
लड़कागुलबदनगुलरू। ग़रज़लड़केतोक्याहैंयेतोबू
ढोंपरकरैंजादू। फिरैंगेयेलियेऐसामगरबच्चागिलह
रीका ● इसीबच्चेकीदौलतहमनिकलतेहैंजिधरया
रो। हरेकलड़कायहकहताहैमीयांसाहिबइधरआओ

। गलेलिपटाओ हमकोयाहमारेमुहसेबोलेना । सिवा
इसकेजोकुछदिलमेंहोवहभीशौक़सेकरलो । पैदि
खलादोहमेंटुकबैठकरवचागिलहरीका ॥ यहवह्व
च्चाहैयारोजिसबचेकोश्रल्लादिखलावे । वोहींउसकोलु
भाकरदाबकेऊपरचढ़ालावे । गरीबश्रदनाकालड़का
कबहमारेध्यानमेंश्रावे । फ़रिश्तेकाभीलड़काहोतोएक
दमदाबखाजावे । अगरदेखेहमाराएकनज़रबचागि
लहरीका ॥ वढ़ीउलफ़तहमेंजबसेनज़ीरइसशोखव
चेकी । उड़ाईंनबतोसैरैंहमनेक्याक्याकुछतमाशेकी । न
ख़ाहिशलअ्लकीहमकोनपिदड़ीकीनपिद्देकी । नचाहत
हैकबूतरकीनमैंनाकीनतोतेकी । हमेंकाफ़ीहैअबतोउ
मरभरबचागिलहरीका ॥ ३५ ॥ ॥ ख़ूरेज़्करिश्रमां
नाज़्षितमग़मज़ोंकीझुकावटवैसीहो । भिज़गांकोसि
नानज़रोंकीश्रनीश्रबरूकीखिंचावटवैसीही । ऐयारन
ज़रमक्कारश्रदानिवरीकीचढ़ावटवैसीही । क़तालनि
गहश्रौरदिलदग़ाज़बआंखोंकीलगावटवैसीही । पलकों
कीतरकपुतलीकीफिरनसुरमेंकीघुलावटवैसीही ॥
कोउसपरक़ुदरतकाश्रालमहैवहश्रालमहूरकहांपावे ।

गरपड़दामुहसेदूरकरेख़ुरशेदकोचकरआजावे ।
अवऐसाकुसमभूकाहोदिखतावभलाक्यौंकरलावे। व
हमुखड़ाचांदकाटुकड़ासाजोदेखपरीकोग़शआवे।गो
सौंकीदमकख़ूबीकोऊमकरगौंकीखुलावटवैसीही ❁ थी
क़ेरदुपट्टेकीसिरपरसंजाफ़तमामीकोछलटो। वल
दारलटैंतसवीरजबींजकड़ीमेंडोनीचीकंघो। दिखलो
टनजावेअवक्यौंकरऔरदेखननिकलेक्यौंकरजी। व
हसनअंधेरीकालोंकीऔरमांगचमकतीबिजलीसी। कु
लफ़ोंकीखुलतपट्टीकीजमनचोटीकोगुंधावटवैसीही ❁
वेददर्दखिलमगरवेपरवाबेकलचंचलचटकीलीसी। दिल
सख़्तक़यामतपत्थरसाऔरबातेंनरमरसीलीसी। आ
नौंकीबानछ्ठीलीसीकाजलकीबां[illegible]कटीलीसी। वहआं
खेंमस्तनशीलीसीकुछकालीसीकुछपीलीसी। चितवन
कीदग़ानज़रोंकीकपटसैंनोंकीलड़ावटवैसीही ❁ उस
काफ़िरबींनोऔरनथकेआंदाज़क़ियामतशांनभरे। बै
रगहरेचाहज़नख़दांमेंसौआफ़तकेतूफ़ानभरे। वह
नरमेंसाफ़सिनारःसेवहमोतीसेदांमानभरे। वहकान
निरेतूफ़ानभरेकनफूलौंबालेजानभरे। बुंदोंकीहिल

तक़ुमकौंकीझुकतबालेकीहिलावटवैसीहो ❁ चिहरेपर
ऊ़लकीगरमीसेहरआनज़मकनेमोतीसे। ख़ुशरंगपं
खोनेकीबूंदेंसौबारझलकनेमोतीसे। हंसनेकीअदामें
फूलझड़ैंबातौंमेंटपकनेमोतीसे। वेपतलेपतलेहोंटग
ज़बऔरदांतचमकतेमोतीसे। पांनोकीरंगावटक़हरसि
तमधड़ियोंकीजमावटवैसीहो ❁ वहकाफ़िरगुद्दीका
आलमघबरायपरीभीदेखजिसे। औरगोराखाफ़गलारे
खाअरमावेमोतीदेखजिसे। दिलबोटेतड़फेहाथमले
औरग़शखावेजीदेखजिसे। वहगरदनऊंचीऊ़लभ
रीकटजायसुराहीदेखजिसे। बांएंकीमुड़तदाएंकी
फिरतमोड़ोंकीखिचावटवैसीहो ❁ कुछनाज़ोअदाकुछ
मग़रूरीकुछजौरजफ़ाकुछबांकपना। कुछआमदऊ़
लकेमैंघमकीकुछकाफ़िरजिस्मरहागदरा। यहशोर
जवानीउठतीकाचढ़ताहैउमडकरजोंदरिया। वह
[illegible]उभराजोभरायहऊ़लकाआलमझूमरहा। शा
नोंकीअकड़बांनोकीपकड़सजधजकीसजावटवैसीहो ❁
उससीनेकायहपाकखितमउसकुरतीकातंकेवग़ज़ब।
वहक़ादकीजोनतक़हरवबाउसकाफिरच्छबकोज़ेवग़ज़ब

व। उनडिबियोंकाअम्ज़ारबुरास्तनगेंदोंकाआसेवराज़
त। वहछोटीछोटीसख़्तकुचैंऔरकच्चेकच्चेसेवराक़्व।
अंगियाकीभड़कगोटेकीदमकबंदोंकीकसावटवैसीही●
थीपहनेदोंनोहाथोंमेंकाफ़िरजोकड़ेगंगाजमनी।कु
छग्रोशकड़ोंकीझनकारेंकुछझनकेंचूड़ीसोनेकी। यह
ज़ाखमदेखकेआशिक़कासीनेमेंनतड़फेक्योंकरजी।
वहप्यारीप्यारीअंगुश्तेंऔरपोरैंनाज़ुकनाज़ुकसी। म
हंदीकीरंगतफ़िंदक़कीजमनछल्लोंकीकसावटवैसीही
● वहकाफ़िरधजजीदेखजिसेसौबारक़यामतकालर
ज़े। पाज़ेबकड़ेपायलघुंघरूकड़ियांछडियांगुजरीतो
ड़े। हरजुंबिशमेंसौझनकारेंहरएकक़दमपरसौझन
के। वहचंचलचालजवानीकीऊंचीएडीनीचेपंजे। क
फ़्शोंकीखटकदामनकीझटकठोकरकीलगावटवैसीही
● एकशोरक़यामतसाथचलेजिसदमनिकलेकाफ़िर
बनठन। बलदारकमररफ़्तारग़ज़बदिलकी[illegible]
जोंकीदुश्मन। मक़्कूरकरूंअबक्यायारोउसशोख़के
क्याक्याचंचलपन। कुछहाथहलैंकुछपांवहलैंफड़कैंबा
जू थिरकेंसबतन। गालोंवहखिलमत्ताजोवहबलाउंग

लीकीनचावटवैसीहै ● तक़रीरवयांसेबाहरहैयहका
फ़िरऊ़ख़श्रहाहाहा । कुछआपनईकुछऊख़नया
कुछजोशजवांनीउठतीका। लपकैंऊपकैंउनमांहैं
कोमैंयासेआहककूंक्याक्या । वहवांकेवाक़ूहोशहवाश्र
शिक़सेखेलैंवांकपटा । पकुचींकीपकुंचपकुंचेपैग़ाज़
ववांकैंकीबंधावटवैसीही ● आंखैंमेंसाफ़उड़ाले
दिलइसढबकीकाफ़िरऐयारी । औरहटजावेसेकोइ
परैगरबातकहूंकुकमतलबकी । कुंहनीमारेचुटकी
लेलेछेड़ेझिड़केदेगाली । हरआनचेख़ुशहरदम
अफ्वाहरबातख़ुशीकीचुहलभरी । रमकेंफेज़िबआ
शमकेंकीजुगतफबतीकीफबावटवैसीही ● यहाग़ह
मग़ज़बउसकाफ़िरकाजोवातकहोवहसबसमझे । क
ठेमचलेसैसांगकरेवातोंमेंलड़ेनज़रोंमेंमिले । यहशोख़ी
औरयहवेतावीएकआंनकभीनिचलीनरहे । चंचलआ
चपलमटकेचटकेखिरखोलेढंपेहंसहंसदे । गालीव
दुशनमतालीवहवलाउंगलीकीनचावटवैसीही ●
तसवीरकाआलमनखसिरसेकबतलकतोसाफ़परीकीसी
। कुछचीनजबींपरसंठरहीऔरहैंठोंमेंकुछगालीसी ।

बेदर्दीसख़्तीवक़ूतेरीऔरमिहरमहब्बनदेडोसी।झूठी
ऐयारीनाकचढ़ीभोलीआनीपक्कीपीढी। ठट्ठेकीउड़ा
वटऔरग़ज़बक़हक़हकीहंसावटवैसीही ❁ जबसे
साउसकादरयाहैकिसतरहनलहरोंमेंबहिये। गर
मिहरमहब्बतहोबिहतरयाजौरजफ़ाहोतोसहिये।दि
ललोटगयाहैग़शहोकरबसऔरतोआगेंक्याकहिये।मि
लजायनज़ीरऐसीजोपरीछातीसेलिपटकरसोरहि
ये। बोसोंकीचिपकबग़लोंकीलिपटसीनोंकीमिलावट
वैसीही॥३६॥ ❁ ॥चमनमेंजबगयालालावहचीरा
बांधकरऊदा। लगाछातीमेंनाफ़रमांकेक्याक्यारश्कका
फूदा ❁ बुतोंकीनाज़बरदारीमेंभीतेरीइबादतकी।
मेरीइसबंदगीकाअबतुहीशाइदहैमअबूदा ❁ रक़ी
बोंकीजोकलदाऊदीतुमनेदेखलीप्यारे। अबआओदे
खोटुकयारोंकेदाग़ोंकाहैदाऊदा ❁ कहांफिरयहउछ
लनाकूदनाहमराहख़ूबांके। दिलाअबकूदलेजबतककने
शीनलियोंमेंहैगूदा ❁ दवालीमेंनज़ीरऔरहोफलावा
लेउड़ादिलको। यहउल्लूकादहसेरावीचमेंआकरक
हांकूदा॥३७॥ ❁ ॥ख़ुदाजानेसनमआवेनआवे।भ

ऐसाक्याहैदमआवेनआवे ● ग़नीमतबूझइसमिरनबैठ
नेंको। फिरअपनाव्हांक़दमआवेनआवे ॥ ३८॥ ● ॥
वहीसबमेंरहेहरआपहरहरसेनियाराहै । वहीहै
देखलोपरतक्छजगतउसकापसाराहै ● उसीनेबात
केकहतेहीयहरचनारचीसारी। उन्हींनेक्याअलग
ब्रह्मांडयहमंदिरसंवाराहै ● हैअबकादावबाज़ीजीत
होकरलालजाघरमें । नडालानामपासाजिसनेइसजु
गमेंउसीनेजन्महाराहै ● कियाअगर्वसागरनेंकिस
रवरकौनहैमेरी । कितीनअंजलीसेलेअचमनकिया
मीठेकोखाराहै ● कुटमकोदेखभूलाहैनहीसाथीकोई
उसबिन्। नभाईबंदहैतेरायहांअवसुतनदाराहै ●
मिलायाआपमेंऊ.पाउसीकेजोऊएसनमुख। समाया
जोतिमेंवहजिसकोअपनेहाथमाराहै ● मिलीहैअट
लपदवीउसकोजिसनेनामकोसंभरा । ऊआवेकुंठ
वासाउसकिसीकाआपकोजिसनेविचाराहै ● वहीहै
दिलमेंवैठादेवआनमपूजातूघटमें। उसीहरकायही
तूजानदिलठाकुरद्वाराहै ● जोचानरहैतोदिलमेंर
हनिरालाजगतसेअवहां। किजैसेआजमेंरहतेसेभा

गोनइफ़पाराहै ● तुटहांसेफ़िक्रकर अपनी अरेग़ाफ़ि
लफ़साहिकौं । यहदुनियांनहींहैइसकोसमझदहद
झकारारहै ● लियाथानामगनकाअजामेलसदनाकै
ररैदास । बनाऊंसाखमेंक्याक्याउन्हींकीसबकोनास
है ● जोआकरनामसेलागावहीएकदममेंपऊंचाहै
● नगरनेदेखलेचमकेहैहरदमधूसिताराहै ● उसी
काध्यानधरहरदमसग़ीरऔरयादमेंरऊतू । उसी
हरिकातुमभीदेखियेटहांव्हांसहाराहै ॥ ३९ ॥ ● ॥
सिफ़तोसनामेंस्हष्टरचैयाकीक्यालिखूं । औसाफ़ोख़ूबी
ब्रजकेबसैयाकीक्यालिखूं । पैदायश्अबमेंकुलकेकरै
याकीक्यालिखूं । कुछभटहमेंउसलुधकेलिवैय्याकी
क्यालिखूं । तारीफ़कहांतकइनकन्हैयाकीक्यालिखूं ● श्री
वेदव्यासजीनेबनायेकईपुरान । लिखनेमें तोभीआया
नहींकुछउनकाबयान । लिखलिखकेथकरहेहैंहरएक
करनविश्तख़ान । कहतीहैक़लममेरीवहहैजोबेज़
बान ॥ तारीफ़ ● ॥ आद्धारकासेद्रोपतीकाचीरबढ़ाया।
। वैकुंठसेआयाहसेगजराजछुटाया । प्रह्लादकोजल
नेसेअगनकीचवबचाया । मेवाकोत्यागसागविदुरकेयहां

खायो ॥ तारीफ़ ● ॥ परवतरखाहैउंगलीपैजौंराईकी
गाला। संगग्वालबालकेखड़ेनंदकेलाला। बनसीवड़ा
मेन्द्रव्यकरतेभारकोटाला। छिनमानमेंइंदरकासभी
गर्वनिकाला ॥ तारीफ़ ● ॥ गायैंचराकेआंवैंथेसंगग्वा
लबालसे। हरतर्फ़आगदेखकहैंसबगुपालसे। अब
केहमेंबचाओयहांकिसीचालसे। आंखैंमिचावचोयाउ
न्हेंअग्निजालसे ॥ तारीफ़ ● ॥ अबक्याकहूंमैंतुमसेउ
नकीलतीफ़बात। पीलंबरओढ़लेटरहेवछुपाकेगात।
भृगुजीनेवौंहीआनकेछातीमेंमारीलात। जबपांवदाब
नेलगेश्रीकृष्णअपनेहाथ ॥ तारीफ़ ● ॥ क्याक्याबयां
नहोसकैंजोजोकियेहैंकाम। दोवहांपेड़थेखड़ेजोनंद
जीकेधाम। औरदहीडालहाअबंधाएउन्होंकेकाम।
ऊखलसेबांधहाथउन्हेंनाकभेजाधाम ॥ तारीफ़ ● ॥
फिरजांदगुरूकेसबीएकआनमेंलाए। फिरतीनौंलोक
मुहमेंजसोदाकोदिखाए। छोनीअठारैरनमेंजोभार
थकेजुगाए। तहांअंडेभारथीकेघंटासेबचाए ॥ तारीफ़
● ॥ सुरजनसाहुष्टजानकेजुन्नारसेछोड़ा। एकआं
नमेंजिनमारलीयाकेसरीघोड़ा। फिरआंधीमेंजोमि

नौबतकोनिनकाश्वानोड़ा । श्रौरनामधरदाहै जोफिरश्रा
पभगोड़ा ॥ तारीफ़ ● ॥ एकदम्मेंकियेदूरसुदामाके
दलिद्दर । कंचनकेसभीकरदियेएकश्चानमेंमंदर ।
जोचाहैसोईकरताहरीश्चापबिश्वंभर । फिरश्चापग
एदांनकोबलराजाकेदरपर ॥ तारीफ़ ● ॥ सोलैहहजार
कैदसेछुटवांई हैंरांनी । दिनरातकहाकरतीथींवेकृष्ण
कहांनी । रथवांनहोश्रर्जुनकेकरीगोष्टपुरांनी । फिर
श्रपनेबचनसेतीभएदर्द्दकेजोदांनी ॥ तारीफ़ ● ॥
कहतासग़ीरतेरेजोदासोंकादासहै । दिनरातउसको
तेरेहीचरनोंकीश्चासहै । एकनाममुझेतेरेहीसेनिनबि
लासहै । गुनगाएसेतेराहियेहरदमहुलासहै । तारीफ़
कहोहृष्णकन्हैयाकीक्यालिखू ॥ ४० ॥ ● ॥ हरदम
सुदामायादकरैकृष्णमुरारी । रहताहैमसहाबदि
लद्दरमेंवहभारी । श्रौरदिलमेंकिसीश्चांननहींसोच
विचारी । करताहैगुज़रमांगकेवहभीखभिखारी । ह
रश्चांनदिलमेंकहताहैधनहैतूबिहारी ● देखासुदामा
तनपैतेसाबतनचीरहै । फैंटाबंधाहैसिरकेऊपरसोभी
चीरहै । जामेंकेटुकड़ेउड़गयेदांमनधजीरहै । गर

जिस्म उसका देखोतोदुखलहकोरहै । सोपैवंदोंसेभीं
धोंकेधोतीकोसुधारी ❁ जागहलक्केकीठीकरहैगाटसड़
दार । लुटियाहैएकछोटीसीसोभीहैछेददार । लो
हेकीकरछीतिसकेभीफूटेउसकेकनार । पैवन्ददारहं
डीरसोईकायहसिंगार । पथरौटाफूटातिसकोभीथा
सीसीसुधारी ❁ छप्परपैशोरकीजियेचंजनीसहो रहा
। तिसकोभीघासपातसेसारार फूंकिया । फूटीदिवार
चारोंतरफ़जोखंडरपड़ा । श्यारोंनेघरकियावहांपंछी
नेघोंसला । अवसेसीझोपड़ीजोसुदामानेसुधारी ❁
गोशेकेबीचअपनेलियेख़ावगाकरी । पायेदिवारलक
ड़ीलगाखाटसीधरी । तिसपरहैफ़र्शओढ़नेकोगोंद
कीनरी । सोवैहैशानउसपैजपैभुहसेउठहरी । साधों
केबीचरहकेउमरअपनीगुज़ारी ❁ उनकोजवईस्वर
हसेकुछआदर्दंदुखकमाल । एकरोज़दिलमेंइस्तरी
नेयेंकुछख़याल । हैंगेकदीमयारतुम्हारेमदनगुपा
ल । जाओउन्हींकेपासकरेंगेवकुतनिहाल । तुमसे
उन्हींसेगहरीहमेशेसेहैयारी ❁ औरतकीवातसुनके
सुदामादीयाजवाब । तुमकोहैइस्रकीचाहवहपानी

काजौंकुबाव। कहनेलगीजवइस्तरीहमजोकहांहैनाव
। जवदेखाहालआपकाहमनेनिपटखराब। तवअर्ज
कीहैजानेकीतक़सीरहमारी ❁ उनपैमुकटजड़ाऊहै
औरसिरमेंशख़ाली। कुंडलहैंउनकेकानौंमेंमुजपैन
छींवाली। उनपैपितंबरहैगामेंकमलीरखुंकाली। वे
हैंडेगुमछोटेयेंबोलीवहघरवाली। क़दमोमेंउनके
जाओख़बरलैंगेतुह्मारी ❁ तेरीयहबातख़ूबमैंसमझाहूं
नेकतर। अवहालपरतुमेरेनहींकरतीहैनज़र। वे
तीनलोकनाथहैंमुझसेमिलैंक्योंकर। फिरउनकहेहै
जाओवहांतुमजोबेख़तर। हरएकतरहसेखड़ीसम
झावेहैनारी ❁ उरबिनधरमकरमनहीहोताहैकुछय
हां। उरबननहींमिलेहैगाआदरकिसीमकां। उर
सेजोऐशचाहोमिलेहैजहांतहां। तुमहरकेपासजा
ओकहैंकामनीवहां। बख़शैंगेउरवकुतसातुह्मेवेगिर
धारी ❁ उरकेलिएतोदिलमेंहजारौंफ़िकरकरैं। उ
रकेलियेतोयारसेहरगिज़नहींमिलैं। इससेभलाहैम
रनानहींजाकेकुछकहैं। उसहीकानामदिलमेंसदा
अपनेहभजपैं। हैविर्द अपनीमांगनाहररोज़वक़ारी

● दीगरक्यावहस्तरीकहतीहैवेहैंश्याम। लाखोंज
न्होंनेभगतोंकेअपनेकियेहैंकाम। यहवातजाकेपूछलो
नहीख़ासहैयहआम। मानोंहमारीसीखजधरकोकरो
पयाम। इसवातसेदिलमेंकभीहूजेनहीआरी ● तेआ
दौंनाथहेंगेवड़ेकृष्णकन्हाई। क्याचीजभेटघरमेंनहीं
देहैदिखाई। जवइस्तरीपड़ीससेएकनौफ़ाकेआई।
चादरमेंचौमहचांवलोंकोकिनकीवंधाई। फिरकोहै
सुदामानेजोचलनेकीतयारी ● लेवग़लमेंविरंजसु
दामावहांचले। रस्तेमेंश्यामजवकुईएकशहरमेंव
से। व्हांसेदुआरकारख़ाश्रीकृष्णनेजसे। सोतेकुएसु
दामासवेरेजभीजठे। चारोंतरफ़सेद्वारकासोंनेकीनि
हारी ● दिलमेंकहैसुदामायहदेखूंहूंमैंक्याख़ाव। ज
बकृष्णजीनज़रपड़ेकरनेलगाहिजाब। हरनेजोअपने
पासबुलायावहीं शिताब। चरनोंकोधोकेसिरपेचढायास
भोंनेआब। दरशनकोमिलकेआईहैरानीजोथीसारी ●
ख़ुशहोकेसुदामासेकृष्णउठलिपटगए। दोनोंकेगले
मिलतेहीआनंदसुखभए। मिलतेहैंकवकिसीकोदहां
भागोंसेआगए। आदरसेआपलेगएसिंहासनपरनए

जबखैमकुशलपूछीरहीवहननदारी। उन्हूनेकोउन
केवास्तेपानीगरमकिया। भोजनअनेकतरहकातैया
रकरलिया। अश्नानध्यानकरकेसुदामानेजलपिया
। फिगातरहतरहकासुदामाकोजबदिया। उनमेंलगा
हैबादलागोटाअोकिनारी ● श्रीकृष्णबोलेदोजोहमें
दीनाहैभाभी। यहबातसुनसुदामानेगांठऔरभी
दाबी। हरनेचलाकेहाथवहींखेंचलीआपी। दोमुट्ठी
मुहमेंडालतेधरतीसभीकांपी। औरतीसरीकेभरने
हीरुकमनियहपुकारी ● तांनादियाफिरवोहींकि
देखेतुम्हारेयार। आएहैंमांगतेहुएऐसेसेखराबखार।
तिलोकीदेचुकोगेकुछअपनाभीहैशुमार। श्रीकृष्णबोले
तुमकोक्याअपनाकरोजोप्यार। यहकंगलानहींहैगासु
नप्रानपियरी ● ऐसेनिहंगलाइलेदेखेहैंकमकहीं।
खुशहैंयेअपनेहालमेंपरवाइन्हेंनहीं। कुछमिलग
यातोखायानहींबिस्राकभी। एकदम्मेंचाहेंजोमि
लेइनकोहैक्याकमी। येजबकेयारहैंकोईयारन
थारो ● श्रीकृष्णनेविश्वकर्माकोबुलवाकहापुकार।
सोनेकेमहलखूबसुदामाकेहोंतयार। एकदम्मेंवाग़म

हुलबनाएवहारदार। कोठेकिवाड़खिड़कीयांछज्जेब
हारदार। चौवारेमीनेवंगलेजड़ाऊहैंअटारी ॥ फि
रगुफ़्गोमेंबातखड़कपनकीचलाई। बहुदिन्भीतुम
कोयादहैकुछयानहीभाई। भेजागुरुनैंनेलकड़ीकोमें
हमांधीलेआई। मुट्ठीचनेकीवैठवहांतुमनेजोखाई
। औरहमनेरातकाटीहैपीपानीवहखारी ॥ कईदि
नसुदामाकृष्णकेव्हांद्वारकारहे। पटरानीभाईबंधुस
भीटहलमेंलगे। घरघरदिखाईद्वारकासबसंगहर
फिरे। मांगीबिदासुदामानेचलनेकीकृष्णसे। सबआं
नकेहाजिरहुएजोथेदरबारी ॥ पहुंचावनेसुदामा
कोजादैंचलेसारे। बलदेवकृष्णदैंनैंभएपाओंनिया
रे। औरसंगसाथबलीवड़ेजोधाजोभारे। नगरएह
रसभीहुआआआअहरदुआरे। होनेबिदाकेसबनेकिया
चरणोंकोन्यारी ॥ कृष्णसेहुआसुदामावहांसेतिज
बचला। तबराहबीचआयाहुआसोचयहबड़ा। और
नकहैगीलाएहोक्यामुझकोदेदिखा। इसजिंदगीसे
भौतभलीक्याकहैंभेजा। किसवास्तेवहशंड़वहुतहैगी
खहारी ॥ यहसोचकरतेकरतेपुरीपासआगई। दे

खेतोघरनछप्परआफ़तबड़ीभई। नेब्राह्मनीनिशाँजन
घरक्याकहूंदई। दीनाहमेंसोदेखाकरीघातयहनई
। वहभीलियायहमारअजबभीतरीमारी ❁ फिरना
महलकेगिर्दसुदामानज़रपड़ी। देखेतोएकइस्त्री
कोठेपैहैखड़ी। वहवहांसेबुलावेसुदामाकोहरघड़ी
दिलमेंकहेसुदामायहरांनीहैकोईबड़ी। जांऊंजोघ
रमेंमारेंगेदरबांनहज़ारी ❁ क्याबारबारमुझकोबुला
वेहैक्यासबब। शाइदमुझेपसंदकियाअपनेदिलमेंअ
ब। इतनेमेंवहमहलसेउतरपासआईजब। कहनेल
गीयहदेखोविभोहै इन्हींकीसब। मायायहहरिकीदे
खहमेंऐसीबिसारी ❁ फिरबांहपकड़लेगईचौकीपै
बिठाया। ख़ुशबूलगाउबटनामलाख़ूबन्हिलाया। ले
टहलुएनेसुर्खपितंबरजोपहराया। पूजाकरीसुदा
मानेहरिध्यानलगाया। खिरमनमेंचेरियांखड़ीलेहाथ
मेंझारी ❁ नितउठसुदामाअपनेकरेयहीखटकर
म। औरपुन्नदानपूजाकरेउसकाजोधरम। हरिबिन
नहींतोजानेकोईउसकाअबमरम। कईदिनगुज़ा
रेइसतरहभोजनकियेगरम। सोवेवहहरिकेध्यानमें

खा[illegible]नसुप्यारी ❁ इसतरहजोसरीररहेहरिकेध्यान
में। यहभक्तजोगहैगाकठिनकराधियांनमें। यहबातहै
लिखीहुई बेदऔरपुरांनमें। श्रीकृष्णनामलेलेहरेक
आंनआंनमें। बैकुंठधामपांवैंजोहैंहरकेपुजारी॥४१॥
❁ ॥ समाप्तमस्तु ❁ ॥ जिसकिसीकोछापेकीपोथी-मि
यानज़ीरकेशृंगार-बृंदसतसई-सभाबिलास-तुल
सीकृतरामायन-प्रेमसागर-राजनीति-अंगरेजीबो
ली-भाषाक़ायदा-लतायफ़हिंदी-सर्फ़उरदू-चहि
येतिसेदोजगहकलकत्तेमेंमिलैगीएकठंठनियाबाज़ार
मेंश्रीलल्लूजीकेयहांऔरदूसरेबड़ेबाज़ारमेंश्रीबाबूमो
तीचंदगोपालदासकीकोठीमेंश्रीहरिदेवसेठकेयहांइति
॥ ❁ ॥ श्रीयुत् लल्लूजी के छापेख़ाने में पोथी छापी
श्री मदन पाल ॥ ❁ ॥ सुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ ❁ ॥

SP 1/27

॥ फिरिश्तअशआरकी ॥

	पत्र	पृष्ठ	पंक्ति
इश्क	१	१	१
कलजुग	१०	२	७
परमारथ	११	२	१५
बुढ़ापा	१७	२	२
बुढ़िया	२१	१	५
लड़कपन	२२	१	१२
जाड़ा	२३	१	१२
वसंत	२४	१	१६
होली	२५	१	६
आंधी	२७	२	१५
बरसात	२९	१	४
पैराकी	३०	२	६
गिलहरीकाबच्चा	३१	१	१६
रुपया	३४	१	१२
[illegible]	३७	१	३
[illegible]	३८	२	१२

तमामशुद ॥

National Library, Calcutta-27.